शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 9 | उदयपुर रविवार 15 मई 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कुक्की : हाड़ौती-मेवाड़ में प्राचीनतम पुरा-संपदा के अनोखे खोजी

-डॉ. कहानी भानावत-

अत्यंत साधारण परिवेश में कुक्की ने बिना डिग्री का बोझा लिए पुरा-संपदा संबंधी जो कार्य किया वह पूरे विश्व में चौंकानेवाला है। हाड़ौती-मेवाड़ की बनास तथा चंबल के किनारे बसे पुरा-मानव की खोजों में उनके 99 स्थल सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं जो उनके कार्य की कीर्ति को अक्षुण्ण रखनेवाले हैं। पूरे विश्व में कुक्की अकेले ऐसे खोजक हैं जिन्होंने शैलचित्रों की इतनी गुफा-पट्टियां खोज निकालीं।

बूंदी में मेरी पहली नियुक्ति वहां के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के चित्रकला विभाग में हुई। कॉलेज के सामने ही न्यू कोलोनी में सन् 1997 से 2000 तक मेरा निवास रहा। वहीं मेरी भेंट कुक्की से हुई जिनकी किराणा की दुकान थी। खरीददारी के दौरान मुझे लगा कि दुकानदारी से अधिक उनकी रूचि पुरा-संपदा की खोज-खबर में है। धीरे-धीरे उन्होंने बताना शुरू किया कि उनकी बचपन से ही पुरा-संपदा की खोज में रूचि रही। पहाड़ों पर रंगीन पत्थर खोजने वाले एक पड़ोसी ने उनके मन में भी कुछ खोजने की प्रेरणा जागृत की। एकबार वे बूंदी बाईपास मार्ग के ऊपर पहाड़ी पर बनी मोरड़ी की छतरी पर घूमने गये तो दो मुद्राएं मिलीं। मीरा साहब की पहाड़ी पर शीशे की बंदूक की गोलियां मिलीं। ऐसी ही गोलियां कोटा के पास स्थित भड़कगा के माताजी के पास शिकारगाह के नजदीक मिलीं। प्रारंभ की यह छोटी सी खोज ही उनके जीवन में मील का पत्थर साबित हुई।

यह कोई 1966 का समय रहा होगा जब उनकी जिज्ञासा बलवती हुई और वे निरंतर पुरा-संपदा की खोज में दौड़ते-भटकते रहे। उन्होंने बताया कि 1978 से 88 तक उन्होंने सिक्कों की खोजबीन कर अच्छा संग्रह किया फिर वे पुरा-संपदा से जुड़ी अन्य खोज में निकले। दिल्ली का नेशनल म्युजियम देख उनके काम करने की दिशा ही बदल गई।

बूंदी जिले में दूर-दूर तक फैली पर्वतमालाओं तथा उनमें स्थित देवस्थलों, पहाड़ी नालों, नदी किनारों के टीलों पर उन्हें थप्पी में पुरा-संपदा मिली। प्राचीन मुद्राओं के चांदी, तांबे, सीसे तथा मिश्र-धातु के सिक्कों के साथ ही पहाड़ी गुफाओं में शैलचित्र भी मिले। पक्की मिट्टी के बर्तन-खिलौने भी मिले। बूंदी के आसपासी क्षेत्रों-रामेश्वर महादेव की पहाड़ी नाले, खटकड़, दुर्वासा, सथूर, झर महादेव, लोईचा खजूरी का नाला, बाणगंगा, शिकार बुर्ज आदि प्राचीन स्थानों, खण्डहरों, नदी किनारों के टीलों व पहाड़ी स्थलों में जो मुद्राएं मिलीं वे लोदी वंश, सुल्तान वंश एवं राजपूत कालीन हैं। कुछ मुद्राएं शुण व खिलजी वंश, सामंत देव, मांडू के सुल्तान तथा मुगलकाल की हैं।

5 अक्टूबर 1955 को जन्मे ओमप्रकाश, जो कुक्की नाम से ही जाने जाते हैं, ने सन् 1993 में घोड़ा पछाड़ नदी के किनारे नमाणा के टीले में लाल-काले रंग के मिट्टी के बर्तन और खिलौनों का पता लगाया जो ताम्रयुगीन सभ्यता के हैं। खजूरी का माला, कांजरी सीलोर, खेरुणा तालाब गांव आदि के पहाड़ी नालों से पाषाण युगीन उपकरण मिले जो लगभग पचास हजार वर्ष पुराने हैं। इनमें चोपर, हेंड एक्स, कलीवर, स्क्रेपर मुख्य हैं। बूंदी में अठारह ऐसे स्थान चिन्हित किये हैं जहां प्रागैतिहासिककालीन मानव लघु पाषाण उपकरणों को तैयार करता था।

सन् 1993 में खोज के गर्भ से कुक्की को पाषाणकाल से लेकर उत्तर पाषाणकाल व ताम्रयुगीन सभ्यता तक के अवशेष मिले। तांबे से बनी विभिन्न चीजें, पत्थर व पक्की मिट्टी के उपकरण व बर्तनों के टुकड़े, रंगीन पत्थर के मुनके आदि भी मिले। यहीं से गर्दन से ऊपर के विभिन्न पशु आकृतियों के हिस्से, छोटे-बड़े पक्की मिट्टी के सींग, विभिन्न चित्रकारी युक्त टुकड़े मिले हैं। विशेष उल्लेखनीय एक शेर-मुख मिला जो भूरे व काले रंग का पक्की मिट्टी से बना है।

- शेष पृष्ठ छह पर

अक्षय तृतीया : 9 मई स्थापना दिवस पर

उदयपुर ग्राम्य-शहर : बितायें यहां कई प्रहर

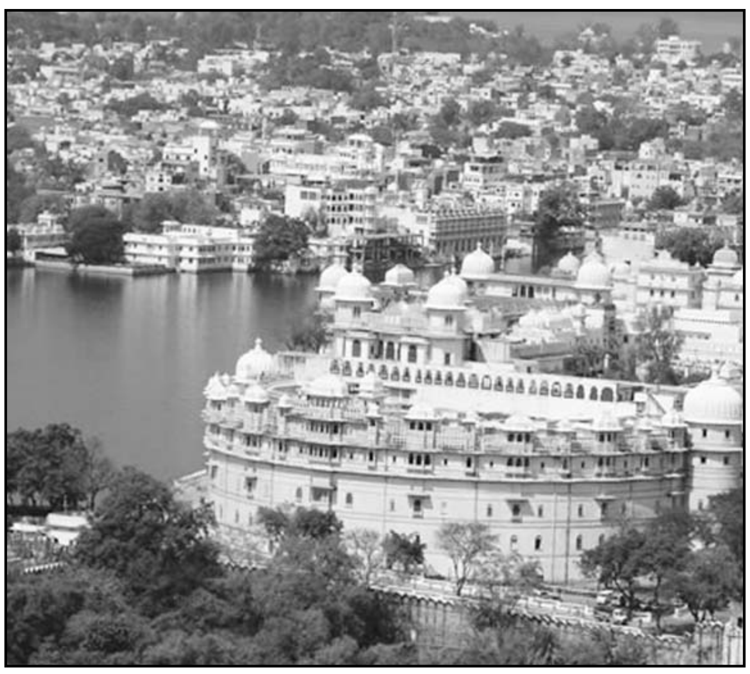

किस नाम से संबोधित किया जाय उदयपुर नगर सौंदर्य को। पर्यटकों, विदेशियों, देशियों ने कई नामों से संबोधित किया है इसे। कितने-कितने दूर देशों से लोग आये हैं, आते रहते हैं यहां इस छोटे से शहर, नगर, पुर, ग्राम ललाम में। इतिहास की बही यहां बांचे नहीं खूटती है। संस्कृति की शबनम यहां संस्कारित होती है। यहां तत्व और पुरातत्व है। बंधेज की साड़ियां और सेज बिछी पहाड़ियां हैं। यह लोककलाओं की गगरी, झीलों की नगरी है। प्रेमदीवानी मीरां का पावन बिछावन, प्रताप के पौरूष का झरता सावन यह शहर सौंदर्य का स्वप्न लिए उदित होता है। यह अचल है मगर इसका कोई अस्ताचल नहीं है। यह उदयपुर जितना दर्शनीय है उतना प्रदर्शनीय है।

मेवाड़ की ठेठ संस्कृति, उसका अपना ठाठ, ठसक, आन-बान, मान-मनुहार और मेहमानदारी का सरोपाव लिए यह शहर अपने संस्थापक सूर्यवंशी महाराणा की उदित ध्वजा लिए, पांच सौ वर्षों से अधिक का समय शिलांकित किये, विश्व मानचित्र में पर्यटकों की आंखों चढ़ा हुआ है। मेवाड़ राज्य के अधिपति एकलिंगजी और राजकर्त्ता महाराणा रामचंद्रजी के वंशज होने के कारण 'श्रीरामजी' और 'श्रीएकलिंगजी' यहां के मुख्य नाम और काम-काज के प्रात: स्मरणीय उच्चारण अंकन हैं।

इसके गर्भ में चार हजार वर्ष पूर्व की मानव बस्ती के पुरातन अवशेष, आघाटपुर (आहाड़) की सभ्यता को सत्यापित करते खुदाई में प्राप्त मिट्टी के बर्तन, 25 किलोमीटर की दूरी पर झामरकोटड़ा में 150 करोड़ वर्ष पुरानी मगरमच्छी चट्टाने, कुछ और आगे जावर में सीसे-जस्ते की एशिया प्रसिद्ध खाने। इस नगर की धार्मिक पताका के प्रतीक पांच धाम- केसरियाजी, नाथद्वारा, एकलिंगजी, द्वारिकाधीश और गढ़बोर।

स्वतंत्रता के लिए लड़ने, मर मिटने वाले अमर शहीदों का रणांगण हल्दीघाटी, प्रणवीर प्रताप और अकबर का विश्वप्रसिद्ध युद्ध-क्षेत्र, एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की बनावटी झील जयसमुद्र और राजसमंद की पाल पर पच्चीस शिलाओं वाला विश्व का सबसे बड़ा शिलालेख, दसवीं शताब्दी में बना राजस्थान का खजुराहो कहलाने वाला जगत का कलात्मक मंदिर। वाह रे उदयपुर। तू धन्यभाग है जो इन सबका हेत लिए है।

- शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (9) : डॉ. महेन्द्र भानावत

और सूरज डूब गया : दिनेश नंदिनी डालमिया

उदयपुर की दिनेश नंदिनी चोरडिया ने गद्यगीत लेखिका के रूप में ख्याति अर्जित की। विवाहोपरांत वे चोरडिया से डालमिया हो गईं। उदयपुर में रहते उनके साथ जनार्दनराय नागर और देवीलाल सामर ने भी गद्यगीत लेखन प्रारंभ किया। नागर तो अंत तक इस विधा का लेखन करते रहे। सामरजी ने छोड़ दिया और लोककला-संस्कृति की ओर समर्पण कर दिया।

सत्ताईस वर्ष बाद उन्होंने अपने आत्मपुत्र गोविंद कर्णिक की मृत्यु पर गद्यगीतों का एक संकलन 'अन्तर्मन' के नाम से दिया। भारतीय लोककला मंडल से इसका प्रकाशन गोविंद की प्रथम पुण्यतिथि 24 मई 1967 को हुआ। भूमिका में सामरजी ने लिखा- ''सत्ताईस वर्ष पूर्व मेरी लेखनी से विलुप्त हुई काव्यधारा पुनः स्वप्नवत् प्राप्त हुई और स्वप्न ही की तरह लुप्त होकर मुझे झकझोर गई है।'' पीड़ा से परिचालित, आंसुओं से आप्लावित तथा उच्छवासों से विगलित इस कृति में तेरह गद्यगीत सामरजी के अन्तर्मन की गहन वेदनानुभूति से भीगे हुए हैं।

दिनेश नंदिनी जब भी दिल्ली से उदयपुर आतीं, कलामंडल अवश्य आतीं। सामरजी से मिलने के बाद मैं भी उनसे मिलता रहा। एकबार मैंने उन्हें कलामंडल का पूरा संग्रहालय और शोध विभाग में मेरे द्वारा किये जा रहे कार्यों से रू-ब-रू कराया तब उन्होंने विजिटर्स बुक में लिखा जो मुझे उनके गद्यगीत का ही टुकड़ा लगा-'अपनी अनुभूति व्यक्त करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं मिले। मैं मंत्रमुग्ध हो मूक ही जा रही हूं।'

उदयपुर में जीवनसिंह चोरडिया प्रसिद्ध एडवोकेट थे। कलामंडल से उनका जुड़ाव अंत तक रहा। वे इस संस्था के उपाध्यक्ष भी रहे। मेरा उनसे मिलना-जुलना होता रहा। स्वभाव से वे बड़े मस्तमौला, फक्कड़ और सौंदर्यबोध के धनी थे। दिनेश नंदिनी उनकी बहिन थी। चोरडियाजी विचित्र अभिरुचि के कलाप्रिय व्यक्ति थे। कई विषयों के ज्ञाता थे और बहसबाजी में किसी को भी मात देने में माहिर थे। उदयपुर से प्रकाशित दैनिक जय राजस्थान के अपने चलते-चलते स्तंभ में 6 जनवरी 1980 को मैंने उन पर लिखा-

चोरडियाजी एक विशिष्ट कम्प्यूटर को अपने मन-मस्तिष्क में लुकाये हैं जो समाज के विशिष्ट व्यक्तियों से ही अपना खाद-पानी ग्रहण कर अपनी ऊर्जा तैयार करता है। ज्ञान का, विज्ञान का अथवा किसी भी सुज्ञान का कोई विषय ऐसा नहीं छूटा जिस पर चोरडियाजी की फाइल अनबोली रही हो। ऐसे सब विषयों पर उनके पास वर्गीकृत फाइलें हैं। उनमें 50 हजार से अधिक चार्ट्स नत्थी हैं जो ब्रह्मांड, जीव, पुनर्जन्म, अंतरिक्ष, मस्तिष्क, नृत्य, कला, ब्रह्म तथा विज्ञान जैसे सभी पहलुओं पर सटीक चितराम प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों के साथ-साथ उनके नोट्स भी बड़े अजूबे और उलेले हैं।

32 X 34 इंची लंबी सीट्स पर बने ये चार्ट्स जिन फाइलों में बंधे हैं वे फाइलें दर्शनीय ही हैं। कलकत्ता से विशेष रंग-ढंग से बनी ऐसी प्रत्येक फाइल 300 रूपये से अधिक कीमत की है।

चोरडियाजी न केवल चार्टकार हैं, अच्छे चित्रकार भी हैं। उनके चित्रों का अपना संसार है। अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने एक अलग सी जीवन-गीता सूत्र रूप में तैयार की। उनके कमरों में लगे चित्र तथा निर्वस्त्र आदमकद मूर्तियां, बगीचे में बनाये गये छोटे-मोटे खूबसूरत मंदिर और पहाड़ी दृश्य, फव्वारे एक अनोखी धुनधनी व्यक्ति के अखूट सौंदर्य और कांत-कला के जीवंत उदाहरण हैं।

दिल्ली में दिनेश नंदिनी के निवास पर एकबार मैं भी सामरजी के साथ गया। बिस्कूटवाले डालमियाजी की एक विशाल कोठी में दिनेश नंदिनी से कोई घंटे भर तक उदयपुर की, कलामंडल द्वारा किये जा रहे कार्यों की, लेखन-प्रकाशन की बातों के साथ उनके निजी जीवन की बातें भी होती रहीं। मुझे लगा कि वे अर्थ-सम्पन्न तो हैं किन्तु मन से अधिक उल्लसित नहीं हैं। उन्होंने इशारे में इसका खुलासा भी कर दिया था। मुझे लगा वह मेरी वजह से सामरजी को खुलकर अपने को नहीं खोल पा रही हैं। बाद में एक-दो बार मेरा उनसे मिलना हुआ। कलामंडल द्वारा प्रकाशित 'रंगायन' और अन्य प्रकाशन उन्हें नियमित भिजवाता रहा। कभीकभाक मैं अपनी पुस्तकें भी उन्हें भेज दिया करता।

दिनेश नंदिनी द्वारा लिखे और भी पत्र मेरे पास आए किंतु संभालकर रखे दो पत्र मेरे संग्रह में हैं। ये दोनों ही बम्बई से लिखे हुए हैं। पहला पत्र तिथि-विहीन है। इसमें उन्होंने सामरजी की मृत्यु के बाद कलामंडल के बिगड़े हालात पर चिंता व्यक्त की। अपने लेखन की सूचना दी और मेरे लेखन पर भी टिप्पणी की। यह पत्र मुझे डाक द्वारा 28 अक्टूबर 1983 को मिला। दूसरे ही दिन मैंने इस पत्र का उन्हें उत्तर लिख भेजा साथ ही मेरी छपी 'आछी करणी पार उतरणी' पुस्तक की प्रति भी उन्हें भेजी। यह पत्र इस प्रकार है-

द्वारा के. बी. एल. चोरडिया
8 मलाबार कोर्ट,
रिड्जे रोड, बोम्बे

मान्यवर भाई भानावतजी,

कई दिनों से इच्छा हुई कि आपको एक पत्र लिखूं। भाई देवीलालजी और जतनजी (सामरजी की पत्नी) के दिवंगत होने के बाद मेरे तो कलामंडल से जैसे सारे सम्बन्ध ही टूट गये हों ; फिर भी कुछ विज्ञप्तियां पढ़कर सोचा आपको ही लिखकर पूछलूं। क्या यह सच है कि कलामंडल अब गिरने के कगार पर बैठा है? और उसकी देखरेख कुछ नहीं हो रही है या कि सब मामला उलझन में पड़ गया है। यह तो सच है कि जिस तरह उन्होंने (सामरजी ने) एकान्तिक और व्यक्तिगत रूप में अपने प्राण फूंके थे वैसा तो दूसरा 'बाप' बिना किसी एषणा के नहीं मिलेगा फिर भी यह अब तो एक सार्वजनिक और समृद्ध संस्था है जिसका सुचारू रूप से चलना उदयपुर ही नहीं, देश की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक है। खून पसीना सींचकर जिस व्यक्ति ने अपने व्यक्तित्व का इसमें विलय कर अपने आपको मरने के बाद भी जीवित रखा है उसी की स्मृति संजोये रखने के लिए कोई सशक्त हाथ ढूंढ़िये न! आप तो प्रारंभ से ही इस संस्था से जुड़े रहे हैं।

मैं आपके लेख यदाकदा 'धर्मयुग' में पढ़ती हूं और आपकी पत्रिका (रंगायन) का भी प्रत्येक पृष्ठ बड़े चाव से देखती हूं। मुझे आपकी भाषा, अपने शहर और अपनी संस्कृति से अनहद प्यार है। उसी नाते मुझे आपके मेवाड़ी शब्द का कहीं-कहीं बनना बहुत ही सुखद लगता है। इस बारे में भी कुछ लिखकर पत्रिका के लिए अवश्य भेजूंगी। हालांकि आपने कभी उसकी मांग नहीं की है।

एक बात और मेरी एक नवीनतम कृति 'और सूरज डूब गया' नेशनल प्रेसवालों ने दिल्ली से प्रकाशित की है। किसी तरह आप उसे उपलब्ध कर पढ़ें और उसकी चर्चा करें, धर्मयुग में लिखें या अपनी पत्रिका में ही लिखें तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं स्वयं आपको पुस्तक भिजवा देती पर मैं तो आज दो महीने से बम्बई बैठी हूं। मेरा छोटा लड़का बीमार है। उसका ओपरेशन हुआ था। अभी न तो घाव भरा है न ही बुखार उतरा है। मैं इसी चिंता के चक्रव्यूह में ऐसी फंसी हूं कि बाई जतनजी की मृत्यु के समय मन करके भी नहीं आ पाई। फिर आती भी किसके पास? आशा है आप प्रसन्न हैं और काम अच्छा चल रहा है। कभी दिनेश, गोरधान से मिलें तो उन्हें मेरी याद करा दें।

आपकी शुभेच्छुका
दिनेश नंदिनी डालमिया

दिनेश नंदिनी का दूसरा पत्र 4 नवम्बर 1983 का लिखा है। इसमें उन्होंने मेरी पुस्तक 'आछी करणी पार उतरणी' के बहाने मेवाड़ की लोकसंस्कृति की बहुत सारी रंगीनियों का भी स्मरण करा दिया। यह भी लिखा- 'प्रकाशक को 'और...सूरज डूब गया' की प्रति भेजने को लिख दिया है पर प्रकाशक तो प्रकाशक ही ठहरे।' सचमुच हुआ भी यही। न मुझे प्रति मिली और न मैं उस पर कुछ लिख ही पाया। यह पत्र इस प्रकार है-

द्वारा के. बी. एल. चोरडिया
8 मलाबार कोर्ट,
रिड्जे रोड, बोम्बे
4.11.83

भाई भानावतजी,

आपकी पुस्तक पढ़ी। बहुत अ%छी लगी। ये सब कहानियां मेरी सुनी हुई होते भी पुनः पुनः पढ़ने का मन हुआ और उसके सजीव चित्र सामने दिखाई पड़े तब बहुत सुख हुआ। अपनी भाषा को अधिक प्रचलित करने के लिए उसका साहित्य में उतरना अधिक आवश्यक है। कुछ लोग लिखते हैं। पत्रिकाएं भी इक्की-दुक्की मैंने देखी हैं पर किसी ने आज तक इस भाषा को समृद्ध करने का बीड़ा नहीं उठाया। उस पर जम कर काम नहीं हुआ। मेरा विश्वास है कि मेवाड़ी और मालवी भाषा, वहां का रहन-सहन, राजकीय कामदारों का चरित्र, उनकी तेहजीब आदि को लेकर कोई रचना हो तो वह किसी भी साहित्य के साथ संतुलन कर सकती है। हमारे यहां के व्यवहार में, आचार में जितना मिठास है, जितनी रसानुभूतियां हैं उतनी संसार के किसी भी लोकसाहित्य में नहीं मिल सकती।

एक-एक गीत, एक-एक कहानी, प्रेम-प्रकरण, रसगुगों की तरह सराबोर है रस में। वहां की रंगीनी, महलों की गणगौर, सांझियां और सवारी की बात सोचती हूं तो रोमांच हो आता है। मैंने तो सब देखा है पर उस समय रंग नवीनता का चढ़ा हुआ था। वे चीजें सब बेकार लगती थीं। अब उन घूंघट काढ़े बाजुबंद पहने नारियों और रंगीन पगड़ी साफों में ऊंचे कंधों से चलनेवाले नरों को देखने के लिए मन तरस-तरस जाता है। मैं शहर के मध्य में रहती थी जहां हर तिविहार को नारियां रंगीन कपड़ों में सरसराती हुई, प्रकाश और हंसी के फुहारे छोड़ती हुई गुजरती थीं। अब तो सब शुष्क नजर आता है। राजमहलों के कुछ चित्र लिखने की मेरी भी बहुत इ%छा है, कभी सोचना आप। आप बहुत बढ़िया और ठहरनेवाला काम कर सकने की क्षमता रखते हैं। पता नहीं, भाई देवीलाल ने आपकी प्रतिभा को पहचाना या नहीं।

किसी तरह मेरी पत्रिका 'और... सूरज डूब गया' उपलब्ध कर लें तो अ%छा है। उस पर आप अवश्य कुछ लिख देवें। मुझे खुशी होगी। किसी अपने ही सजातीय की कलम से कुछ निकले तो वह ज्यादा जिंदा और सत्य के निकट होगा। मैंने अपने प्रकाशन को भी लिखा है कि वह आपके नाम एक प्रति अवश्य भेजे पर प्रकाशक तो प्रकाशक ही ठहरे। अस्तु

आशा है आप कलकत्ते से लौट आये होंगे? मैं तो अभी यहीं हूं, रहूंगी क्योंकि अभी बाबू की समस्या नहीं सुलझी है उनका 15 तारीख तक फिर ऑपरेशन होना है। चिंताग्रस्त हूं, कुछ सुझाई नहीं पड़ता पर भगवान के हाथसब छोड़कर कुछ अंशों में निश्चिंत भी हूं। इनके अ%छे होते ही उदयपुर की यात्रा करूंगी। आशा है आप प्रसन्न हैं। दीवाली की शुभकामनाओं के साथ।

आपकी बहन
दिनेश नंदिनी

इसके बाद दिनेश नंदिनीजी के समाचार जब भी डॉ. रेखा व्यास से भेंट होती तब प्राप्त करता। रेखा ने बताया कि वह उनसे यदाकदा मिलती रहती है। दिल्ली के वातावरण से अधिक उन्हें उदयपुर का, मेवाड़ का जनजीवन प्रिय और आकर्षित करने वाला है किंतु अब उदयपुर में भी उनका कोई परिवार नहीं है। अब, जब वे नहीं हैं, सोचता हूं यदि वे बड़े घर की बहू नहीं होतीं तो एक भिन्न तरह की बड़ी लेखिका होतीं जो ग्राम्यांचल से जुड़े परिवेश को अपनी कलम की कमनीयता से कद्रवान बनाने की सशक्त सामर्थ्य रखतीं।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/-
परंपरा का लोक	475/-
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-

एयरटेल पर डबल डेटा की पेशकश

उदयपुर। भारत की सबसे बड़ी दूरसंचार सेवा प्रदाता भारती एयरटेल ने ग्राहकों के लिए डबल डेटा उपलब्ध कराने वाले नए प्रीपेड डेटा पैक लॉन्च की घोषणा की है। नए डेटा पैक ग्राहकों के लिए किफायती साबित होंगे और साथ ही रात में उन्हें अतिरिक्त डेटा सुविधा का लाभ दिलाते हुए पैसों का अच्छा मोल भी दिलाएंगे और ग्राहकों की डेटा लिमिट को भी दो गुना करेंगे। नए पैक के चलते ग्राहकों को मौजूदा डेटा पैक की तुलना में रीचार्ज पर 30 प्रतिशत तक बचत की सुविधा मिलेगी।

भारती एयरटेल (इंडिया एंड साउथ एशिया) के डायरेक्टर-मार्केट ऑपरेशंस अजय पुरी ने कहा कि एयरटेल मे हम लगतार ग्राहकों को बेहतर अनुभव और पैसों का बढ़िया मोल दिलाने की पेशकश करते हैं। स्मार्टफोन के बढ़ते प्रयोग और चौबीसों घंटे ऑनलाइन रहने की ग्राहकों की जरूरतों के मद्देनज़र, हम अब अपने डबल डेटा पैक की पेशकश के साथ ही ग्राहकों के लिए बेहतर मोल का लाभ लेकर आए हैं। फिलहाल, 265 प्रीपेड डेटा पैक पर ग्राहकों को मिलता है 1जीबी का 3जी 4जी डेटा जो 28 दिनों की वैधता के साथ आता है। 292 रु के डबल डेटा पैक के साथ ग्राहकों को मिलेगा 2जीबी डेटा (1जीबी 3जी 4जी रैग्यूलर और 1जीबी रात में)। इस तरह, ग्राहकों की डेटा लिमिट बढ़कर 2जीबी हो जाती है और उन्हें अपने मौजूदा पैक की तुलना में 30 फीसदी तक बचत का लाभ मिलता है।

युद्धवीर आशाशाह का योगदान

बात हल्दीघाटी युद्ध की है। यह सन् 1576 में हुआ था। इधर, हल्दीघाटी का रण मचा हुआ था और उधर अकबर की एक टुकड़ी को कुंभलगढ़ भेज दिया गया। उस समय वहां पर किलेदार आशाशाह देवपुरा था जो बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसका भतीजा डूंगरसिंह था। दोनों बड़े बहादुर, जोशीले और अपने कर्तव्य के प्रति मर मिटने वाले थे। किले का मुख्य दरवाजा लोहे के तीखे भालों से युक्त, बड़ी मजबूती लिए था।

शाही हाथी बार-बार उनके टकराकर लहूलुहान हो गया था। अकबर के सैनिकों के आगे अपने दमखम को सवाया मानते हुए दोनों वीर अपने हाथों में लपलपाती तलवारें लिए दरवाजे के ऊपर से उतरकर नीचे आए और जोरदार भिड़न्त की।

आशाशाह की 13 वीं पीढ़ी के वंशधर अक्षयसिंह देवपुरा ने बताया कि यह भिड़न्त इतनी जोरदार थी कि शाही हाथी का एक दांत उखड़ गया और सूंड कटकर दूर जा गिरी। इससे हाथी आगे नहीं बढ़ सका और पाछपगा (पीछे) खिसकने लगा जिससे उसने अपनी ही सेना के जांबाजों को बुरी तरह कुचल दिया। इस घटना की साख देता देवपुराजी ने यह छंद सुनाया जो उन्हें उनके बहीभाट (पोथी वाचक) से सुनने को मिला-

गजदंत उखाड़ण देपुरा,
हाथ लिया शमशीर।
जो डूंगरसी पाछो,
फरे लाजे कुंभलमीर॥

भावार्थ- अकबर के शाही हाथी के दांत उखाड़ने के लिए वीरवर आशाशाह देपुरा ने अपने हाथ में तलवार उठाई। रणबाज डूंगरसिंह भी कम जोशीला नहीं था। यदि वह इस युद्ध से मुंह मोड़ लेता तो कुंभलगढ़ को लज्जित कर देता।

देवपुरा अक्षयसिंह ने बताया कि पोथी भाट जब भी आता है, इस छंद के अतिरिक्त दो और छंदों से शुभराज करता है। ये छंद हैं-

आशाशाह न हुवतो,
देपुरो दीवाण।
राण उदय हो तो नहीं,
हुतो न पातळ राण॥

अर्थात्- यदि आशाशाह देवपुरा दीवानगी धारण नहीं करता तो उदयसिंह नहीं होता और यदि उदयसिंह नहीं होता तो राणा प्रताप नहीं होता।

हिंदूपत री आंण,
राखी रांण प्रतापसी।
ता पितु उदिया रांण,
रखियो आशा देपुरा॥

अर्थात्- राणा प्रताप ने हिंदू पत की आन रख उसे अकबर के अधीन होने से बचाया। उसके पिता राणा उदयसिंह का आशाशाह देवपुरा ने मान बनाये रखा।

अक्षयसिंह देवपुरा ने बताया कि आशा के बाद क्रमश: श्रीपत, दामा (श्रीपत का पांचवा पुत्र), रघुनाथ, रेखचंद, परसराम, भवानीदान, दौलतराम, नारायणदास, जयकिशन, शालग्राम, रूपचंद, हरखलाल हुए।

राणा प्रताप जानते थे कि आशाशाह की बुद्धिमत्ता, त्याग एवं समर्पण से ही मेवाड़ राजघराने की सुरक्षा एवं संरक्षण हुआ। इस एहसान से उऋण होने के लिए उन्होंने उदयपुर का प्रथम नाम देवपुर रखा किंतु बाद में सरदारों की राय से उन्होंने यह नाम बदलकर अपने पिता उदयसिंह के नाम पर उदयपुर कर दिया।

आशाशाह देवपुरा महाराणा सांगा का दीवान था। वह केलवाड़ा का रहने वाला था और कुंभलगढ़ का किलेदार था। वह बड़ा बहादुर, दिलेर एवं हौसलेबाज था। इसी की व्यूह रचना में पन्नाधाय बालक उदयसिंह को लेकर डूंगरपुर और फिर प्रतापगढ़ पहुंची किन्तु बणवीर के आंतक के कारण किसी ने उसे पनाह नहीं दी। उसके साथ एक वारी तथा एक नाई था। अन्त में पन्ना पुन: केलवाड़ा लौटी और आशाशाह के वहीं उदयसिंह को लिए अज्ञातवास व्यतीत किया। इधर बणवीर ने सब ओर उदयसिंह की मृत्यु की खबर फैलादी। पन्ना धाय गूजर जाति की थी जो राजसमंद जिले के कपासन के पास के गांव की रहने वाली थी।

एक समय आशाशाह ने अपने लड़के का विवाह रचाया। इसका निमंत्रण मेड़ता के राव अक्षयराज सोनगरा को भी भेजा। अक्षयराज इस विवाह में स्वयं तो उपस्थित नहीं हो सका किन्तु एक चारण को भेजा। अक्षयसिंह के अनुसार भोज में पकवानों की परोसकारी का जिम्मा अलग-अलग कुंवरों को सौंप रखा था। परोसकारी के समय एक कुंवर ने दूसरे कुंवर से परोसकारी का बर्तन छीन लिया और जोर की थप्पड़ मारदी। चारण यह हाल देख रहा था। उसे थप्पड़ मारने वाला कुंवर अन्य सभी कु वंरों से डीलडौल, चालढ़ाल तथा बलथल में सवाया था और किसी बनिये का पुत्र नहीं होकर राजपूत बालक लग रहा था। चारण से रहा नहीं गया। उसने आशाशाह से उस कुंवर बाबत पूछा । आशाशाह ने चारण को अपना विश्वस्त जान अन्दर का सारा भेद बता दिया और कहा कि वह कुंवर उदयसिंह है। इस पर चारण बोला कि मैं इसका विवाह मेड़ता राव अक्षयराज सोनगरा की बालकी जयन्ताबाई से करवा दूंगा।

चारण ने मेड़ता पहुंच अक्षयराज को सारी घटना कह सुनाई। अक्षयराज के लिए इससे बढ़िया प्रस्ताव और क्या हो सकता था कि यदि उसकी कुंवरी उदयसिंह से ब्याही जाती है तो वह मेवाड़ की महारानी बनेगी। आशाशाह भी चाहता था कि इस विवाह से उसे अक्षयराज से बड़ा संबल मिलेगा जिससे वह बणवीर का प्रभुत्व क्षीण कर सकेगा। यही हुआ।

बणवीर को गद्दी से उतार उदयसिंह को राजगद्दी पर बिठाया गया। प्रताप इसी जयन्ताबाई का पुत्र था जो उदयसिंह के बाद मेवाड़ का महाराणा बना। महाराणा बनने के बाद उदयसिंह ने उस चारण को भी राजसमंद जिले का मेंगटिया गांव जागीर में दिया। इसी चारण वंश में ईश्वरदान आशिया हुए जिन्होंने केसरीसिंह बारहट की बड़ी पुत्री चन्द्रमणि से विवाह किया।

कोटा के बारहठ राजेन्द्रसिंह (92) ने बताया कि चन्द्रमणिदेवी उनकी बुआ थी। बारहठ केसरीसिंह, उनके भाई जोरावरसिंह और पुत्र प्रतापसिंह के साथ ईश्वरसिंह भी क्रांतिकारियों की अग्रिम पंक्ति में थे। तीनों बारहठ-वीर-शिरोमणियों के साथ ईश्वरसिंह भी जेल में रहे। उदयपुर में ईश्वरसिंहजी से मेरी कईबार भेंट हुई। वे बड़े साहित्यप्रेमी और प्राचीन डिंगल काव्यधारा के गंभीर अध्येता थे। केसरीसिंहजी के साथ वे गांधी आश्रम, वर्धा में महात्मा गांधी के संपर्क में भी आये। उन्होंने पिलानी के बिड़ला शोध संस्थान में भी काम किया। चारण पत्रिका का संपादन भी किया और आजीवन खादी पहनी। ईश्वरसिंह के पुत्र मणिराज सुखाड़िया विश्वविद्यालय में सेवारत थे।

हाथी का मद

हाथियों के बारे में आम लोगों ने बहुत सारी बातें सुन रखी होंगी पर हाथियों के मद के बारे में लोगों को अधिक मालूम नहीं। उदयपुर के राजमहलों में किसी समय हाथियों की संख्या 99 थी। यह संख्या कभी कम नहीं हुई। कई बार इसे बढ़ाने का प्रयत्न किया गया पर ज्योंही एक नया हाथी खरीदा जाता पहले वाला कोई एक मृत्यु को प्राप्त होता। संख्या 99 की 99 रहती। इतने हाथियों की देखभाल के लिए खास इंतजाम भी रहता। कई महावत होते जो हाथियों की देखभाल करते।

उदयपुर में आज भी एक पूरी बस्ती का नाम महावतवाड़ी है जिसमें कभी महावत ही रहते थे। एक दिन मैं शायर इकबाल सागर के साथ इसी महावतवाड़ी में सर्वाधिक वयोवृद्ध (90) उलफत अली से भेंट करने चला गया। मैंने उनसे मुख्यत: हाथी के मद और उसके संबंध में प्रचलित धारणाओं के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि हाथी का मद उसकी कनपटी के पास एक सुराख से बहता है। यह पानी की तरह होता है। चौमासे में हाथी अधिक मद करता है। अमूमन माह दो माह तक मद झरता रहता है। अच्छा हाथी चार-चार माह और आठ-आठ माह तक मद देता है। औरतों के लिए जैसे रजस्वला होना आवश्यक है उसी प्रकार हाथी के लिए मद देना। नहीं तो वह बीमार पड़ जायेगा।

मद के दिनों में हाथी को कड़ाई से बांध दिया जाता है और उससे कोई काम नहीं लिया जाता। यह मद हाथी स्वयं ही सूंड से चाट जाता है। बहुत कठिनाई से ही मनुष्य इसे प्राप्त कर सकता है और वह भी महावत ही। इस मद से कस्तूरी जैसी खूशबू आती है। यह मद कई रंग वाला होता है। सफेद भी, हरा भी, गुलाबी और लाल रंग का भी। काला रंग का तो होता ही है। यह मद बड़ा ताकतवर होता है। यदि आदमी उसका उपयोग कर ले तो उसकी ताकत में वृद्धि होती है।

उलफत अली ने बताया कि सिंदल नामक एक हाथी दरबार की सवारी का हाथी था। उसने छह माह तक मद दिया। यह मद काला था पर उसने किसी को लेने नहीं दिया। एक रामप्रसाद नाम का हाथी था। वह बेचारा बड़ा सीधा था। उसने मद लेने दिया। एक और बादल सरकार हाथी था। उसने भी लेने दिया। ताबीज व धूणी में भी मद बड़ा काम आता है।

उलफत अली के पास तीन-तीन हाथी थे जिनकी देखभाल वे स्वयं करते थे। जहां इनका काम उन्हें खिलाने पिलाने तथा ठीक ढंग से रखरखाव करने का था, वहां उन्हें ये सलाम करना, पिछले पांवों पर बैठना, नाचना सिखाते थे। वे उन्हें फेरते, टहलाते, जिमाते और उनकी चमक निकालते। आसोजी चेती दरसावे पर दरबार उनकी पूजा करते तब पांच हाथियों को सोने के जेवरों से खूब सजाया जाता।

इतने हाथियों के बांधने के भी विशिष्ट स्थान होते। उलफत अली ने बताया कि उदयपुर में पीपलिया, कोड़यात, केली, आड़, कालीवास, ऊंदरी, पोपलटी, बागदड़ा, मदारिया, धोयरा, भीलवाड़ा, बड़ूंदिया, पाट्यां, मजावत, मोटागांव, दाढ्या, खांखरी, गटामाता, उनावली, झाड़ोल, तिरपाल, ढोल, कट्यांबाड़, झींडोली, सेलुकाबाग आदि स्थानों पर हाथी बंधते थे। पटना के छतर के मेले से हाथी खरीद कर लाए जाते थे। उलफत अली इस मेले में दस-बारह बार गए। कभी दो हाथी, कभी तीन हाथी, कभी चार हाथी तो कभी तीन हथिनियां खरीदकर लाए। एक हाथी की कीमत पांच हजार की कूंती जाती।

मैंने उलफत अली से पूछा कि हाथी बदला लेने वाला जानवर कहा जाता है और बाजवक्त अपने महावत तक को नहीं छोड़ता है। यह भी सुना है कि उसके निमित्त भोजन में से यदि कोई थोड़ा चुरा लेता है तो उसे पता लग जाता है और ऐसी स्थिति में वह उसके प्राण तक ले सकता है। इस पर हंसते हुए उन्होंने कहा कि हाथी तो बड़ा बुजदिल होता है। वह बड़ा चमक वाला और भड़कीला होता है। उससे तो कुत्ते अधिक ठीक होते हैं जो चमकते-भटकते नहीं हैं। हाथी घास खाने वाली कौम है अत: बदला लेने की दुष्ट-वृत्ति उसमें नहीं पनपती। हाथी के रोट के नाम पर मिलने वाले आटे में से हजारों मन आटा बेचा गया है। किसी हाथी ने कोई बदला नहीं लिया।

यह पूछने पर कि क्या चींटी हाथी को मार सकती है? वे बोले कि यह केवल सुना ही सुना जाता है। चींटी की क्या बिसात जो हाथी के मुंह लगे। उन्होंने बताया कि हाथी के मर जाने के बाद उसके नाखून और दांत काम के होते हैं, शेष भाग नहीं। हथिनी अठारह महीने गर्भ धारण करती है। हाथी का बच्चा या मखना हाथी, जिसके दांत नहीं निकलते, चार वर्ष तक दूध पीता है और अधिक ताकतवर होता है। दांत वाला हाथी ढाई वर्ष तक दूध पीता है, फिर उसके दांत हथिनी को चूभने लगते हैं और वह दूध पिलाना बंद कर देती है।

उलफत अली हाथियों की हर नब्ज पहचानते हैं। उसके चाल-चलावे, प्रकृति, आदत, नाज-नखरे आदि सबके संबंध में उन्हें बहुत अच्छी जानकारी है। हाथी को कब क्या देना चाहिए, कितना खिलाना-पिलाना चाहिए, किस मौसम में उसे किस तरह रखना चाहिए आदि के संबंध में उन्हें सारी बातें मुंह-जुबानी याद हैं। हर प्रकार की बीमारी का इलाज उनकी जबान पर है।

हम जब उनके घर से चले तो कुछ दूर तक वे हमारे साथ आए। इतने में उधर से एक हाथी गुजरा। उन्होंने उसे देखते ही कह दिया कि यह बीमार है। उसकी बीमारी का नाम भी बता दिया और इलाज भी। बोले, हाथियों में तो मैंने पूरी जिंदगी बिताई है। मैंने ही नहीं, मेरे बाप-दादों ने भी यहां काम किया है। यह भी विद्या है। आप कभी फुरसत से आओ तो एक पोथी जितनी बातें बता दूं।

-म.भा.

शीघ्र प्रकाशित

मोलेला की मृण-मूर्ति-कला

लेखिका
डॉ. कहानी भानावत

विश्वप्रसिद्ध हल्दीघाटी के निकट बसे उदयपुर संभाग के छोटे से गांव मोलेला के कुम्हार परिवारों द्वारा निर्मित लोक देवी-देवताओं की माटी की मूर्तियों पर पहली बार लोकधर्मी समाजशास्त्रीय अध्ययन। आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित।

''यदाकदा ही ऐसी पाण्डुलिपियां सामने आती हैं जिन्हें आप एक बैठक और विशेष एकाग्रता के साथ पढ़ लेते हैं। इस पाण्डुलिपि को मैं एक ही बैठक में मात्र पचास मिनिट में पढ़ गया। मुझे आश्चर्य है कि इतने पृष्ठों की पूरी पाण्डुलिपि कैसे पढ़ ली। जब तक आप स्वयं इस पुस्तक को नहीं पढ़ेंगे तब तक 'कहानी का करिश्मा' और मोलेला की मिट्टी का मतलब आपकी समझ में नहीं आयेगा। पुस्तक की पाठकीयता को कहानी ने गुदगुदाया है। एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।''

-बालकवि बैरागी द्वारा लिखित पुस्तक की भूमिका से

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 मई 2016

समस्याओं से अटा शहर

शहर कोई हो, उदयपुर या अस्तपुर ; कभी समस्या विहीन शायद ही रहा हो। स्मार्ट सिटी से पूर्व समस्याएं दूसरी थीं। अब गृह चोरी, वाहन-चोरी, तस्करी, लूटपाट, हत्या, छेड़छाड़ के साथ-साथ आवागमन तथा जनजीवन की सुविधाओं, आवश्यकताओं से जुड़ी समस्याएं बढ़ी हैं। पर्यटकों को लुभाने के लिए शहर को सौंदर्यमय परिवेश देने के लिए भी कई सुझाव प्रस्ताव के साथ अधिकाधिक अर्थोपार्जन की भी समस्या है। यों समस्याएं कभी मिटती नहीं, यह भी सुखद पक्ष ही है। समस्याएं मिटती रहें और आती रहें, यही शहरचक्र का महत्व है।

लेकिन इन दिनों तो सर्वाधिक सामना मच्छरों से करना पड़ रहा है। स्मार्ट शहर के पूर्व भी यह समस्या परवान पर थी। इसे ऋतु-समस्या भी कह सकते हैं। सन् 1991 में भी यह भयावह समस्या थी। इस संबंधी एक समाचार दिनांक 2 मार्च को दैनिक हिन्दुस्तान में छपा था जो इस प्रकार है-

मच्छरों का शहर है मेरा शहर यारों

झीलों का शहर उदयपुर हर समय किसी न किसी समस्या से ग्रस्त रहा है। पानी का अकाल कभी बड़ी भयंकर समस्या रही तो जलकुंभी की समस्या भी बड़ी विकट होकर पसरी। औद्योगिक इकाइयां निरंतर प्रदूषण देकर यहां की सौंदर्यश्री पर कालिख पोत रही हैं। जनमानस की स्वास्थता को लील रही है। शहर की बस्तियों में चौड़े-धाड़े ईंट के अवैध भट्टे अपना साम्राज्य फैलाए देखे जा सकते हैं। लगभग डेढ़ सौ से ऊपर ये भट्टे अपना धुआं देकर पूरे शहर को दमघोंटू बनाए रहते हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार पीछोला के पास एकलव्य कॉलोनी में ही 22 भट्टे हैं। कुछ फतहसागर के समीप संजय पार्क के पास हैं। शहर के अंदर कुम्हारवाड़ा में 50 से अधिक लोग ईंट भट्टे चला रहे हैं। खेमपुरा में भी एक दर्जन से अधिक भट्टे चल रहे हैं। ऐसे ही मादड़ी, ममवाड़ा, भोपामगरी और आयड़ नदी के किनारे बेरोक भट्टे धुआं दे रहे हैं। पर इन दिनों एक समस्या और उठ खड़ी हुई है। वह मच्छरों की है। सड़क पर कहीं निकल जाइये, मच्छरों से जब तक परेशान नहीं होंगे, रास्ता नहीं मिलेगा। एक कवि ने ठीक ही लिखा है-

वह समय था अतर से घोड़े नहाते थे जहां,
यह समय है गंदगी से तर शहर मेरा शहर।
बस्तियों में ईंट भट्टों का धुआं देता अंधेरा,
इन दिनों तो मच्छरों का शहर है मेरा शहर।।

'स्वच्छ जल सबका हक' कैंपेन लॉन्च

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि. ने 'स्वच्छ जल सबका हक' कैंपेन लॉन्च किया है। यह अभियान अपने तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुका है और इस पहल का उद्देश्य राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात राज्य के 30 शहरों में स्वच्छ व शीतल पेयजल उपलब्ध कराना है। इस स्तर पर पेय जल प्रणाली की उपलब्धता एवं गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ है जिसके कारण बड़ी संख्या में लोग नियोजित जल संसाधनों का लाभ उठाने में सक्षम हुए हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र इस व्यवस्था से अछूते हैं। इस वर्ष जल समस्या अधिक है एवं विभिन्न कंपनियों

पहल के तहत कंपनी ने सुरक्षित व बंद पेयजल उपलब्ध कराने के लिए प्रमुख स्थानों व क्षेत्रों को चिन्हित किया है।

वंडर सीमेंट लि. के डायरेक्टर विवेक पाटनी ने कहा कि विश्व बैंक का अनुमान है कि भारत में 21 प्रतिशत संक्रामक रोगों का कारण सुरक्षित जल का अभाव है। भारत में अकेले अतिसार (डायरिया) से रोज 1,600 से अधिक मौतें हो जाती हैं। हाइजीन का पालन भी भारत में एक समस्या है। उन्होंने कहा कि 77 मिलियन लोगों को स्वच्छ जल एवं 769 मिलियन लोगों को बेहतर साफ-सफाई उपलब्ध नहीं है। हालांकि देश में पिछले दशकों में नगरपालिका के ने जल की बचत के लिए, जागरुकता अभियान चला रखे हैं। इसी के मद्देनजर वंडर सीमेंट द्वारा लगातार तीसरे वर्ष 'स्वच्छ जल सबका हक' कैंपेन लॉन्च किया गया है। इस कैंपेन के दौरान वंडर सीमेंट द्वारा राजस्थान, गुजरात व मध्य प्रदेश में मोबाइल वैन को उपलब्ध कराया जाएगा। इन राज्यों में 32 से अधिक गाड़ियां सुबह 10 से शाम 6 बजे तक लोगों को सुरक्षित व शीतल पेय जल उपलब्ध कराएंगे। प्रत्येक जिले में कम से कम 70 से 90 स्थानों पर पहुंचने के उद्देश्य के साथ कंपनी का लक्ष्य इस कैंपेन के जरिए कम से कम 16 लाख लोगों तक पहुंच स्थापित करना है।

पोथीखाना

शाहज़ादा हकीम खां सूर

हल्दीघाटी रूपी कागज पर तलवार रूपी कलम द्वारा मुगलरक्ती स्याही से इतिहास लिखने वाला योद्धा

हकीम खां सूर एक ऐसा रणबांकुरा हुआ जिसने महाराणा प्रताप की सेना में अग्रिम पंक्ति में रहकर अपना ऐसा शौर्य प्रदर्शित किया कि अकबर की सेना मैदान छोड़ भागी और अपने प्राण बचाये। यही कारण है कि हल्दीघाटी और राणा प्रताप के साथ हकीम खां सूर की चर्चा इतिहास का एक उज्ज्वल पन्ना बना हुआ है। डिंगल कविवर देवकर्णसिंह रूपाहेली ने हकीम खां को नायक के रूप में प्रस्तुत कर 100 दोहों के माध्यम से वीररस की अवतारणा की है।

संपादक प्रो. जी.एस. राठौड़ ने प्रत्येक दोहे का हिंदी एवं अंग्रेजी में भावार्थ प्रस्तुत कर कृति की उपयोगिता बढ़ाते हुए कठिन शब्दों के अर्थ, छंद-अलंकार, ऐतिहासिक प्रसंगों, स्थानों तथा व्यक्तियों से संबंधित आवश्यक टिप्पणियां देकर हिंदी-अंग्रेजी पाठकों के लिए भी इसे प्रासंगिक एवं सुलभ बना दी है। यही नहीं, समकालीन राजनैतिक, सामाजिक एवं जीवन परिवेश का जिक्र कर इस कृति को काव्य की उत्कृष्टता के साथ-साथ इतिहास की लोकसम्मत धारणा को भी समृद्ध-पुष्ट किया है।

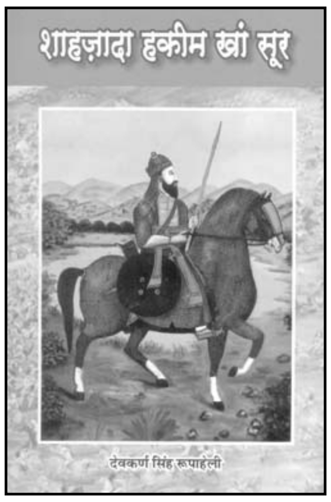

प्रताप केवल राणा ही नहीं थे। वे प्रजा के हित और संबल-सहयोग तथा उनके प्रति समर्पित भाव को भी जानते थे। वे प्रजानायक और प्रजा प्रतिनिधि थे इसलिए हल्दीघाटी युद्ध में सभी जाति धर्म मजहब के लोगों ने सहयोग दिया। उनके सामंत भी प्रजावंत पुरूषार्थी थे। प्रजा पर अपने सत्तासीन होने के भाव उनमें नहीं थे। सब एकजुट थे। हकीम खां अपने श्रेष्ठत्व के प्रतीक थे।

रचनाकार देवकर्णसिंह की डिंगल शैली की यह विशेषता है कि उन्होंने प्राचीन डिंगल भाषा को सरलीकृत राजस्थानी रंग देकर उसे और भी प्रसंगवत बनाने को हिंदीजनित रूप में प्रस्तुत किया है। इससे डिंगल की दुरुहता के साथ-साथ ठेठ राजस्थानी की मुश्किल होती समझ भी सहज बनी है। कवि की कल्पना की उदात्तता, भाषा का सौंदर्यबोधी रलकाव और सूर-वीर के वीरोचित भाव का भूषण देता कृति का प्रथम दोहा ही द्रष्टव्य है-

हळदाघाट कागद बणा, कलम बणा खांडोह।
मुगल रगत स्याही बणा, मजब फरज मांडोह।।

भावार्थ - सूरवंशीय वह उद्भट योद्धा हकीम खां महाराणा प्रताप की ओर से मुगल सेना का मुकाबला करता ऐसे लड़ रहा था मानो वह जांबाज सूरमा तो हळदीघाटी युद्धस्थलरूपी पत्रांक पर अपनी कलमनुमा तलवार को शत्रु-रूधिर सदृश्य स्याही में डुबो-डुबोकर अपने मजहब की वास्तविकता को ही अक्षरों में ढाल रहा हो।

सच तो यह है कि हकीम खां सूर हल्दीघाटी युद्ध में स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने रक्त का अर्घ्य चढ़ानेवाला प्रथम शहीद था जिसने युद्ध के प्रारंभ होने से पूर्व ही प्रताप से विनती की थी- 'मालिक, मुझे और मेरे जांबाज जवानों को हरावल (अग्रिम मोर्चे) में लड़ने की इगात बख्शें। जहां आपका पसीना बहेगा, उस मिट्टी को पठान अपने रक्त से लाल कर देगा।' इस कथन का सरासर निर्वाह करते हुए उस शहीद-वीर के मुर्दा हाथों से भी तलवार नहीं छुड़ाई जा सकी। अंततः उसे तलवार सहित दफन किया गया।

पुस्तक का परिशिष्ट भाग हकीम खां सूर से संबंधित उपयोगी जानकारी, हल्दीघाटी के युद्ध में शहीद हुए योद्धाओं की नामावली, दिल्ली के मुगल तथा सूरवंश के बादशाहों की गद्दीनशीनी से संबंधित मूल्यवान जानकारी से बड़ा समृद्ध बन पाया है। पुस्तक का प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार, सोजतीगेट के बाहर, जोधपुर से हुआ है जो राजस्थानी साहित्य, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व, लोकसाहित्य का प्रतिनिधि प्रकाशक एवं वितरक है।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' के अंक 8 में प्रकाशित लेख एक : लेखक दो में सहारनपुर के साहित्याचार्य वी. के. शुक्ल के 5 अक्टूबर 1976 को लिखे पत्र के उत्तर में डॉ. महेन्द्र भानावत ने 11 अक्टूबर 1976 को लिखे पत्र में स्पष्टीकरण करते हुए लिखा- मुझे तो संतोष है कि मेरा लेख अन्यों को उपयोगी लगा। किसी लेखक के लिए इससे बढ़कर आनंद की बात क्या हो सकती है। वह पत्र इस प्रकार है-

11.10.76

प्रिय महोदय,

आपका 5.10.76 का लिखा कार्ड मिला। राजस्थान ललित कला अकादमी वालों ने मुझे इस संबंध में पत्र लिखा था। मैंने उन्हें 10.8.76 को जवाब भी दे दिया था। 'आकृति' में जो लेख छपा था, वह तो मेरा ही है। आकृति में ही क्यों, यही लेख मेरा नवीन राजस्थान, समाजवाणी, श्रमजीवी, संघशक्ति आदि पत्रिकाओं में भी छपा है। भाषा और शैली से भी उसका पता लगाया जा सकता है। मेरे तो कोई आपकी दया से एक हजार के करीब लेख और लगभग दो दर्जन पुस्तकें छप चुकी हैं। यदि मेरा प्रमाण ही चाहें तो मैंने वह लेख कब लिखा और किन कागजों में लिखा, इतनी बारीकी भी दी जा सकती है मगर यह सब मैं क्यों करूं? जिन्हें करना है वो करें मुझे तो संतोष है कि मेरा लेख अन्यों को उपयोगी लगा और भाया कि उन्होंने उसे अपने नाम से देने में ही आनंद सुख समझा। किसी लेखक के लिए इससे बढ़कर और आनंद की बात क्या हो सकती है? मैंने वह पत्रिका नहीं देखी है जिसमें उनका लेख छपा है, आप भिजवा सके तो अवश्य भिजायें। शेष आनंद।

आपका

-डॉ. महेन्द्र भानावत

शब्द रंजन अंक (8) में बाईजी के लिए लिखा गया डॉ. भानावतजी का आलेखमय समाचार 'निधन : हाथी रे होदे परवत डाकिया' पढ़कर मैं अपने आंसू नहीं रोक सका। उन्होंने बहुत ही अर्थपूर्ण, भावपूर्ण और उत्तम शीर्षक दिया। शब्द, भाव, भाषा, शैली, लोकपक्ष, स्वप्नशास्त्र आदि अनेक दृष्टियों से बाईजी की दिवंगति का यह सर्वोत्तम समाचार-आलेख है।

संकेत, आभास, व्यक्ति, परिवेश, प्रसंग या लघु प्रसंग उनकी लेखनी का सपर्श पाकर प्राणवान बन जाते हैं। तथ्यों को बारीकी से पकड़ने की उनकी निराली शैली को नमन करता हूं। **-डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई**

शब्द रंजन पाक्षिक के दो अंक प्राप्त हुए। सरसरी दृष्टि से देखने पर लगा कि कोई बड़ी कविता नहीं है। कोई कहानी और लघुकथा भी दृष्टि में नहीं आई। श्री महेन्द्रजी भानावत से मेरा पुराना परिचय है। वर्ष 2012 में श्रीनाथद्वारा में उनसे भेंट हुई थी जब मुझे भी हिंदी भाषा भूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया था। लगभग 10 वर्ष पूरे होने को हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तरप्रदेश के साहित्यजगत में पैर रखने योग्य स्थान मुझे प्राप्त है। वैसे कंधों पर उम्र का बोझ बढ़ गया है और भौगोलिक दूरियां भी बढ़ गई है। इस क्षेत्र की पचास से अधिक पत्रिकाओं 'दैनिक ट्रिब्यून', 'दैनिक समाचारपत्र', 'सत्य स्वदेश दैनिक' में मेरी रचनाएं छपती हैं और कइयों में साक्षात्कार भी छपे हैं। उदयपुर में मेरा घर है, आने पर सूचना दूंगी। पाक्षिक का नाम सुंदर है, ठीक आपके नाम की तरह पारंपरिक लोक से हट कर, बधाई।

-लक्ष्मी रूपल, जीरकपुर

पगड़ी के श्रृंगार

लोकजीवन में व्याप्त मनोरंजन के विविध प्रकारों, त्यौहार-उत्सवों तथा विविध संस्कारों पर जो सांस्कृतिक एवं कलात्मक रंग वैचित्र्य होता है वही लोकरंग है। पगड़ी के लोकरंग में उससे जुड़े विविध जुड़ाव हैं जो पगड़ी की सगाा तथा सुंदरता को बधापा देते हैं। ये सभी जुड़ाव उसके सौंदर्य तथा छवि को निखारते हैं जो उसे धारण करता है। कुछ उपकरण निम्नांकित हैं-

(1) इमली : यह चौड़ी पट्टी को तीन-चार लपेटों में समेटकर तैयार की जाती है। एक पट्टी पर दूसरी, दूसरी पर तीसरी इस प्रकार एक इंची चौड़ाई के रूप में तैयार की जाती है और ऊपर रेशमी धागों से बंध बांधे जाते हैं। यह पगड़ी के नीचे सिर की सुरक्षा के लिए होती है जो सिर के चारों ओर लगी रहती है।

(2) खग : यह इमली का ही एक भाग होता है जो सिर के ऊपर सामने से पीछे की ओर सीधा रहता है। दुश्मन के तलवारों के वार सिर पर किसी प्रकार का असर न कर सकें इसके लिए यह सिर के ऊपरी भागों की रक्षा करता है।

(3) जरी : इसे आसावरी भी कहते हैं। यह सुनहरी तथा रूपहली दोनों प्रकार की होती है। यह सोने-चांदी के धागों से बनाई जाती है। पगड़ी पर प्राय: सुनहरी जरी ही बांधी जाती है।

(4) पासा : यह सिर के पीछे होता है। इमली का ही एक भाग होता है। दुश्मन के वार से गर्दन की रक्षा के लिए इसका उपयोग किया जाता है। यह लगभग चार इंच चौड़ा होता है।

(5) छाबदार : लोहे के बने गोल बर्तन, जिसे छाब कहते हैं, जिस पर मखमल का ग्लोब (खोल) चढ़ा होता है। इसमें विविध प्रकार के आभूषण रखकर राजा-महाराजाओं के सामने ले जाये जाते थे। इन्हें ले जाने का काम विशिष्ट व्यक्तियों के जिम्मे होता था जो छाबदार कहलाते थे। दरबार अपनी इच्छानुसार पसंद का जेवर उसमें से लेकर धारण करते थे।

(6) सर : पाग पर बांधी जाने वाली पछेवड़ी की तरह होती है। इसमें हीरे, पन्ने तथा विविध जवाहरात जड़े हुए होते हैं।

(7) जामदानी : सरपाव (पाग-पगड़ी तथा दुपट्टा) के नीचे जो कपड़ा रहता है वह जामदानी कहलाता है।

(8) किरन : यह सुनहरी जरी की बनी होती है जो खग पर लगाई जाती है।

(9) सरपेच : यह सिर के आगे लगाया जाता है। इसमें हीरे, पन्ने आदि जवाहरात जड़े होते हैं।

(10) चन्दरमा : यह पगड़ी के बांई ओर लगाया जाता है।

(11) लटकन : यह जरी के सुनहरे बादले की बनी होती है। यह पगड़ी के बांई ओर कान के पीछे लटकाई जाती है।

(12) आग्या : यह पगड़ी के नीचे वाले पेच में निकला हुआ होता है।

-म.भा.

टीवीएस एक्सएल100 लॉन्च

उदयपुर। टीवीएस मोटर कंपनी ने राजस्थान में अपनी नई फोर स्ट्रोक टीवीएस एक्सएल 100 लॉन्च की घोषणा की है। नई टीवीएस एक्सएल 100 में 99.7 सीसी फोर स्ट्रोक इंजन लगा हुआ है जोकि शुरूआती पिकअप और 60केएमपीएच की टॉप स्पीड के साथ 4.2 पीएस पावर प्रदान करता है। टीवीएस एक्सएल 100 में टीवीएस मोटर मानदंडों के अनुसार सिमुलेटेड टेस्ट परिस्थितियों के तहत श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ 67 केएमपीएल माइलेज दी गई है (ऑटो-गियर्ड दुपहिया)।

यह पांच रंगों ब्लैक, रेड, ग्रीन, ब्लू और ग्रे में उपलब्ध है। टीवीएस एक्सएल सुपर और टीवीएस एक्सएल सुपर हैवी ड्यूटी के अलावा, टीवीएस एक्सएल 100 राजस्थान में टीवीएस की सभी डीलरशिप्स में उपलब्ध है। टीवीएस एक्सएल की कीमत राजस्थान में 30,328 रूपये (एक्स-शोरूम) है।

टीवीएस मोटर कंपनी के सेल्स एंड सर्विस के वाइस प्रसिडेंट जे. एस. श्रीनिवासन ने कहा कि यह लॉन्च उच्च गुणवत्ता, ग्राहक केन्द्रीय उत्पादों को प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को साबित करता है और टीवीएस ब्रांड के साथ ग्राहकों का मजबूत संबंध स्थापित करने में सहायक होगा।

नई फोर स्ट्रोक टीवीएस एक्सएल100 को आज के ग्राहक की उभरती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है और यह बाजार में सबसे किफायती, भरोसेमंद, चलाने में आसान, दमदार मल्टी-यूटिलिटी दुपहिया में से एक है। हमें भरोसा है कि टीवीएस एक्सएल 100 ग्राहकों को बहुत पसंद आयेगी और इसे बाजार में भी अच्छा रेस्पास मिलेगा।

हिरण्यगर्भा

-डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ-

मेरी कविता के भीतर
फैला है एक नक्षत्रलोक
उमड़ता है एक महासागर
वह समझती है ऋतुओं की भाषा
मौसम के संवाद
और आम आदमी का दर्द,
तभी तो नीले रंगों में खोई
मेरी कविता।
इतिहास के मौन अंधेरों में
कांपते हाथों से
टटोलती है सूर्य-बीज!
उसने देखा है-
उस बदहवास रात को
जो काला लबादा ओढ़कर
पहाड़ की गुफाओं से
लेकर आती है बारूदी आतिशबाजियां।
उसने देखा है-
हिरण्यगर्भ में रखे
उस रोशनी के फूल का झुलस जाना!!
मोहभंग, अवसाद और मृत्युबोध की
कुण्डली में जकड़ा मूल्यध्वंस!!!
बंद दरवाजों का अनकहा वक्तव्य
दिशाओं के घोड़ों पर घूमती चुप्पियां!
सब कुछ देखा है मेरी कविता ने,
तभी तो टीसते हैं
उसके कलेजे में
दर्द बनकर कुछ तीर।
क्यों नहीं व्यवस्थाओं की आंखों में
कांपती कोई झील?
क्यों नहीं दहकता कोई गुलमोहर??
क्यों नहीं चन्द्रमा से
खून के छींटे धोकर

सिंहासन खिलाता है हजारों
गुलाब???
ऐसे में / सहला देता है कोई जब
बिजलियों से मेरी ऊंगलियों को
तब संकल्पित होती है
मेरी कविता।
कि / वह बचायेगी
विष-बीजों से उगे
जहरीले फूलों के सम्मोहन संगीत से,
तितलियों को, भंवरों को, हवाओं को
मेरी कविता का यूं चट्टानी हो जाना
कभी खुरदरा पहाड़ हो जाना
फिर पिघलकर नदी बन बह उठना ही
आश्वस्त करता है उसे
कि / आयेगा एक दिन वह भी
जब सन्नाटे गायेंगे गीत
इन्द्रधनुष के रंग बिखर जायेंगे
रोशनी की बांहों में
खिलेंगे हजारों कमल
जगमगायेगी
सहस्त्रों ब्रह्माण्डों की विह्वलता
और गहरी घाटियों में हंस उठेगा
'सूर्यपुष्प'
तब / जंगल के एकांत सौंदर्य में
वन-कन्या सी घूमती
अनाघ्रत बिंब सी महकती
गुनगुनी धूप की
रेशमी रज़ाई ओढ़कर
गुनगुनायेगी कोई गीत
हिरण्यगर्भा
मेरी कविता।

महाराजा व्हाइटलाइन द्वारा डैज़र्ट व पर्सनल एयर कूलरों की नई रेंज लांच

उदयपुर। एसईबी द्वारा अधिग्रहित ब्रांड महाराजा व्हाइटलाइन ने अपने डैज़र्ट व पर्सनल एयर कूलरों की नई रेंज पेश की है। इस रेंज में 3 डैज़र्ट व 6 पर्सनल कूलर शामिल हैं। सभी मॉडल उत्कृष्ट, प्रभावशाली हैं जो गर्मियों में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। ये नए वेरियेंट इस श्रेणी में कंपनी की सर्वश्रेष्ट पेशकश हैं। इन सभी को यूरोपीय क्वालिटी मानकों के मुताबिक तथा अनुसंधान और विकास के आधार पर वर्षों के अनुभव से विकसित किया गया है। इन कूलरों की खासियत है- उच्च इन-क्लास एयर डिलिवरी व एयर थ्रो डिस्टेंस और साथ ही ये बिजली की भी बचत करते हैं।

ग्रुप एसईबी इंडिया प्रा. लि. के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (सेल्स) शिरीष खेड़कर ने कहा कि इस सिरीज़ में तीन बेहद आरामदेह एयर कूलर और बहुत सुंदर डिजाइन वाले छह पर्सनल कूलर शामिल हैं। इसमें डैज़र्ट एयर कूलर श्रेणी में ब्लिज़ार्ड 60, अटलांटॉ+ एवं अटलांटो तथा पर्सनल एयर कूलर श्रेणी में फ्रॉस्टेयर 10 और 22,

टॉरेंट 30 और 18, ब्लिज़ार्ड 50 और 20 शामिल हैं। सभी मॉडलों में कैस्टर व्हील लगे हैं ताकि घर में इधर-उधर आसानी से घुमाया जा सके। ये मॉडल 3-स्पीड ब्लोअर कंट्रोल एवं 4-वे एयर डिफ्लेक्शन के साथ आते हैं जिससे पूरे कमरे में एक समान ठंडक फैलती है। शिरीष खेड़कर ने कहा कि उद्योग जगत के मंद प्रदर्शन के बावजूद 2014-15 में ग्रुप एसईबी इंडिया के लिए दोनों सीजन बहुत अच्छे रहे और अब हमारा संकल्प है कि हम उस प्रदर्शन को दोहराएंगे तथा एयर कूलर श्रेणी में अग्रणी ब्रांड के तौर पर अपनी स्थिति और मजबूत करेंगे। उन्होंने कहा कि अग्रणी घरेलू उपकरण ब्रांड होने के नाते हमारा उद्देश्य सदैव यह रहा है कि वर्तमान उपभोक्ताओं और नए खरीददारों के लिए उत्तम क्वालिटी के उत्पादों की रचना की जाए। डैज़र्ट व पर्सनल एयर कूलरों की हमारी रेंज इसी विज़न के मुताबिक है।

कहां से आते शब्द?

-डॉ. मालती शर्मा

कहां से आते शब्द?
कहां जाते शब्द ?
कहां पहुंचते शब्द ?
शब्द अर्थ प्रतीक,
मिथक, उपमा, रूपक
की दुनियां की
अनवरत यात्रा है
लोक परंपरा
अरबी का 'रोशन'
फारसी का रोशन
अरब फारस की यात्रा कर
उर्दू-हिंदी का रोशनाई स्याही बना
संस्कृत मसि से मिला
अपने से लिखे जाते काले अक्षरों से
शब्दों से ज्ञान के संसार की रोशनी बना
लोक जीवन में दीपक से बना काजल
आंखों की रोशनी,
नजर का डिठौना बना
टोने, टोटकों में तवे का लोछ बन
काले पड़े चेहरों की दीप्ति बना
रोशनाई की काली स्याही से लिखी
ज्ञान की किरणें
आज भी भीतर बाहर का
अंधेरा हरती हैं
रोशनी करना,
मन के हर्ष उल्लास का प्रतीक
हार पर, अंधेरों-अंधेरों पर जीत है
लोक परंपरा कहती -
'कागज की धौरी;
सफेद धरती पर गीतकार
काले अक्षरों,
शब्दों के बीज बोता है
जीवन की कूंड-क्यारियों में,
भावनाओं के फूल खिलाता
जीवन के अर्थ संजोता है।'

पानी और पानीदार

-लक्ष्मी रूपल-

(1)
सब तरफ पानी की चर्चा है
पानी की बहुत कमी हो गई है
इंसान की प्यास पी गई हैं
झीलें तालाब नदियां सारी।
अब तो 'पानीदार आंखों'
में भी पानी की कमी हो गई है।

(2)
एक दिन मैंने पहाड़ों,
वृक्षों, नदियों से
अपने घर का ठिकाना पूछा था।
आज सुबह-सुबह
एक क्षीण मलीन नदी
मुझसे पानी का पता पूछ रही थी।

(3)
गरल पीकर शंकर
तो बन गये 'नीलकंठ'
हम तो रोज पीते हैं भेद भय का
नफरत, भ्रष्टाचार,
आतंक, अत्याचार का
बम के धमाकों, झूठ, मिलावट,
महंगाई मन की कड़वाहट का
मुखौटों की बनावट
समझने के लिए
अब हमारे पास
कौनसा शंकर बचा है ?

शॉपिंग के साथ मोबाइल नेटवर्क कनेक्शन भी

उदयपुर। फ्यूचर ग्रुप का टी24 प्रोग्राम टाटा टेलीसर्विसेस नेटवर्क द्वारा पॉवर्ड है, जो स्टोर में शॉपिंग के अनुभव के साथ आकर्षक मोबाईल नेटवर्क कनेक्शन प्रदान करता है। जब भी कोई उपभोक्ता फ्यूचर ग्रुप के स्टोर में शॉपिंग करता है, तो उसे मुफ्त टॉक टाईम मिलता है। इतना ही नहीं, उन्हें रिचार्ज कराने के बाद स्टोर पर शानदार डील्स एवं उत्पाद भी मिलते हैं।

टी24 के सीईओ अमित कुमार ने कहा कि जून 2010 में लॉन्च किए गए टी24 पर आज तक 60 लाख से अधिक उपभोक्ता हैं। यह सेवा उपभोक्ताओं को आजादी देती है। यह उनके शॉपिंग के बिल के साथ साथ टेलीकॉम के बिल में भी बचत करती है। यदि ग्राहक स्टोर पर शॉपिंग करता है, तो टी24 के साथ घर का एक फोन पूरी तरह से मुफ्त हो जाता है। यह प्रोग्राम आज के शॉपर्स को शॉपिंग एवं बात करना, दोनों ही फायदेमंद बना देता है।

कुक्की : हाड़ौती-मेवाड़ में...

(पृष्ठ एक का शेष)

पक्की मिट्टी की ही एक बड़ी गोली भी मिली है। इसी टीले में हजारों साल पुरानी सभ्यता दफन है। बिजौलिया क्षेत्र की पहाड़ियों में प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्र मिले। ये पाषाणकाल से धनुर्युग तक के हैं। अलग-अलग चट्टानों, गुफाओं में प्राप्त चित्रों में मानवाकृति बनी हुई है। इनका रंग लाल है। इससे करीब तीन किमी दूर स्थित 30 फीट लंबी और 15 फीट ऊंची चट्टानी गुफा में लाल, काले, गेरू, कत्थई रंगों के सैंकड़ों चित्र हैं। इनमें नील गाय, शेर, हिरण वन्यजीव, मानवाकृतियां बनी हैं।

अक्टूबर 1997 में समेश्वर महादेव के पहाड़ी मालों में पहलीबार शैलचित्रों की खोज की फिर जून 98 में गरउड़दा तथा जून 99 में समझर महादेव नामक धार्मिक स्थान पर एक गुफानुमा चट्टान में गेरुए रंग से निर्मित शैलचित्रों की खोज की। भौगोलिक दृष्टि से हाड़ौती का बूंदी संभाग बड़ा सख्त है। यहां पर्वतमालाएं, नदियां-नाले, पहाड़ी गुफाएं, मैदानी भाग सभी कुछ हैं।

बूंदी और भीलवाड़ा जिले के करीब 125 किमी क्षेत्र में कुक्की द्वारा 38 अलग-अलग स्थानों पर शैलचित्रों की खोज की जा चुकी है। वहां लघुपाषाण उपकरण तैयार करने की कार्यशालाएं भी मिली हैं। इन कार्यशालाओं में कोर सर्वाधिक मात्रा में पाए गए हैं। इनसे साबित होता है कि ये चित्रित गुफाएं प्रागैतिहासिक काल के मानव की हैं। बूंदी के जैतसागर तालाब के पास स्थित गुमान बावड़ी क्षेत्र, शिकार बुर्ज के सरिया खाल, भीमलत, रामेश्वर, आकोदा का नाला, रावल का नाला, खटकड़, तलवास, काजरी, सिलोर, सालरिया, लोईचा, गरड़दा, दुर्वासा, देवझर आदि स्थानों पर खोजी गई उत्तर पाषाण कालीन सभ्यता को सिंधुघाटी एवं ताम्रयुगीन सभ्यता से भी पूर्व का माना जाता है जो ईसा से सात हजार वर्ष प्राचीन है। यही नहीं, साजीपुर के बालाजी के समीप बहने वाली मांगली नदी के किनारे टीले पर दो अति प्राचीन पाषाण के कुण्ड मिले हैं।

इन पाषाण उपकरणों से यह प्रतीत होता है कि यहां निवास करने वाला मानव अनाज पीसकर नहीं, कूट-पीस कर उदर पूर्ति करता था। इस स्थान पर अनाज कूटने के पत्थर के सिलबट्टे एवं पशुओं के शिकार करने में इस्तेमाल होने वाले हंटिंग बोल्स भी मिले हैं जो मानव के शिकार युग का होने की पुष्टि करते हैं। किनारों पर दर्जनों प्राचीन बस्तियों के अवशेष भी मिले हैं जो ताम्रयुग से लेकर रियासतकाल तक के प्राचीन हैं।

शेरशाह सूरि काल के तांबे के सिक्के 1/2/, 1/4, 1/8, 1/10/, 1/16, 1/20 और 1/40 पैसे के अंश में ढले हुए हैं। आधा पैसे के अलावा अन्य सभी अंश दुर्लभ हैं। इस काल में सिक्के दो तरह के बने थे। एक वो जिनमें टकसाल का नाम अंकित था। दूसरे वो जिनमें टकसाल का नाम अंकित नहीं था।

लेकिन यह निश्चित है कि पाया गया यह पहला अंशात्मक सिक्का अलवर टकसाल में ढला था और शेरशाह सूरि काल का है। 2600 वर्ष पुरानी पंच मार्कड मुद्रा लाखेरी के महुआ देवजी क्षेत्र में मिली। इससे प्रतीत होता है कि यहां पर कई राजाओं और सुल्तानों का शासन रहा है।

इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि पूरे विश्व में सबसे अधिक शैलचित्रों की खोज में अभूतपूर्व उपलब्धि अर्जित करने पर भी कुक्की को कोई राज्य स्तरीय सम्मान नहीं मिला। अब तक उनके द्वारा अन्वेषित 99 स्थल उनकी उपलब्धि के अतुलनीय सोपान हैं। आशा है, देर से ही सही, कुक्की की यह खोज भारतीय संदर्भ की अलौकिक पहचान बनेगी।

'द ग्रेट इंडियन समर कार्निवल' में आकर्षक डील्स

उदयपुर। पैनासोनिक इंडिया ने 'द ग्रेट इंडियन समर कार्निवल' लॉन्च किया है जिसमें उत्पादों की व्यापक श्रृंखला पर बेहतरीन डील्स एवं ऑफर पेश किए जाएंगे। इसके अलावा यह कैम्पेन हर श्रेणी में चुनिंदा मॉडलों पर निश्चित उपहार भी प्रदान करेगा। यह कैम्पेन 15 मई से 30 जून, तक चलेगा। 45 दिन के इस कैम्पेन में पैनासोनिक के उत्पादों की व्यापक श्रृंखला पर कई राहतभरी डील्स एवं ऑफर्स पेश किए जाएंगे। पैनासोनिक इंडिया के हेड-ब्रांड एवं मार्केटिंग कम्युनिकेशंस सार्थक सेठ ने बताया कि पैनासोनिक ने एयरकंडीशनर्स, रेफ्रिजरेटर्स, एलईडी टीवी एवं अन्य कई उत्पादों पर आकर्षक डील्स दी हैं। पेपरफ्राई के सहयोग से पैनासोनिक चुनिंदा मॉडलों की खरीद पर निश्चित उपहार दे रहा है। एलईडी टीवी की खरीद पर 28,949 रु. मूल्य का वन सीटर रिक्लाईनर या माईक्रोवेव ओवन की खरीद पर 1280 रु. मूल्य का माईक्रोवेव सेफग्रीन स्क्वैयर डिनर सेट (24 का सेट) जीत सकते हैं। अन्य आकर्षक डील्स में एयरकंडीशनर के साथ डबल बेड कम्फर्टर या रेफ्रिजरेटर के साथ स्टोरेज कंटेनर शामिल है।

ये ऑफर भारत में पैनासोनिक के एक्सक्लुसिव स्टोरों एवं प्रीमियम पार्टनर शॉप्स पर उपलब्ध हैं। सार्थक सेठ, ने बताया कि हम 'द ग्रेट इंडियन समर कार्निवल' कैंपेन की घोषणा करके बहुत उत्साहित हैं। पैनासोनिक पर हम निरंतर अपने उपभोक्ताओं को संपूर्ण संतुष्टि देने का प्रयास करते हैं। हमारा नया कैंपेन उपभोक्ताओं को उत्पादों पर आकर्षक डील्स के साथ गर्मी से राहत प्रदान करेगा। ये ऑफर भारत में पैनासोनिक के एक्सक्लुसिव स्टोरों एवं प्रीमियम पार्टनर शॉप्स पर उपलब्ध हैं।

उदयपुर में होंगे स्पोर्ट्स और कंपनी सेक्रेटरीज ओलंपियाड

उदयपुर। इंटरनेशनल ओलिंपियाड का आयोजन करने वाली विश्व की सबसे बड़ी सस्था साइंस ओलिंपियाड फाउंडेशन ने खेल और कंपनी सेक्ट्री ओलिंपियाड लांच किये है। ये स्पोर्ट्स और कंपनी सेक्रेटरीज ओलंपियाड उदयपुर के स्कूलों में आयोजित होंगे जिसमें यहां के छात्र भी भाग ले सकेंगे। इंटरनेशनल स्पोर्ट्स नॉलेज ओलिंपियाड स्टार स्पोर्ट्स के साथ और इंटरनेशनल कंपनी सेक्रेटरीज ओलिंपियाड भारत सरकार की संस्था द इंस्टिट्यूट ऑफ़ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ़ इंडिया के साथ आयोजित किया जायेगा। इंटरनेशनल स्पोर्ट्स ओलिंपियाड में कक्षा पहली से दसवीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे जिसमें खेल और सामान्य ज्ञान के प्रश्न होंगे जबकि इंटरनेशनल कंपनी सेकट्री ओलिंपियाड में दसवीं और ग्यारवी के किसी भी विषय के छात्र भाग ले सकेंगे। साइंस ओलिंपियाड फाउंडेशन के फाउंडर और एग्जीक्यूटिव निदेशक महाबीर सिंह ने कहा कि साइंस ओलिंपियाड फाउंडेशन के ओलिंपियाड 2015-16 में उदयपुर के दिल्ली पब्लिक स्कूल, सेंट्रल पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, एम. डी एस सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेंट मेरी सीनियर सेकेंडरी कान्वेंट स्कूल, सेंट एंथोनी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के बीस हज़ार छात्रों ने भाग लिया।

उदयपुर के अमन अग्रवाल ने लंदन में फहराया परचम

उदयपुर। लेकसिटी के उभरते हुए होनहार क्रिकेटर अमन अग्रवाल ने लंदन के मरचिस्टन कैसल स्कूल की ओर से खेलते हुए ऑलराउडर प्रदर्शन किया और अपनी टीम को शानदार जीत दिलाई। लंदन के मरचिस्टन कैसल स्कूल की ओर से खेलते हुए पेसिफिक समूह के सचिव राहुल अगवाल के पुत्र अमन अग्रवाल ने पहले गेंदबाजी में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए विपक्षी टीम के तीन महत्वपूर्ण विकेट लिए।

इसके बाद बल्लेबाजी में दमदार प्रदर्शन करते हुए चार चौकों और एक छक्के की मदद से पचास रन बनाकर अपनी टीम को जीत दिलाई। अमन के इस ऑलराउडर प्रदर्शन के लिए उन्हें मैन ऑफ दी मैच के खिताब से नवाजा गया।

उदयपुर ग्राम्य शहर......

(पृष्ठ एक का शेष)

उदयपुर साहित्य, शौर्य और कला के कई सिंह-सपूतों की जन्मस्थली, छोटा सा शहर और यहां की चढ़ती-उतरती गलियां भली। डॉ. राजेन्द्रप्रसाद द्वारा उद्घाटित एशिया का सर्वोत्तम वेस्टर्न रेलवे ट्रेनिंग स्कूल, आधुनिकतम साधनों-सुविधाओं से संयुक्त मॉडल, रेल संचालन के सुलाभकारी बोधकारी प्रदर्शन देता। प्रसिद्ध झील फतहसागर, इसके निर्माण का शिलान्यास किया महारानी विक्टोरिया के तीसरे पुत्र ड्यूक ऑफ कनॉट ने। झील के चारों ओर सर्पाकार इठलाती-बलखाती सड़क। प्रकृति का पुण्य वरदान। तट के उधर पहाड़ियां-अरावली पर्वत मालाएं और इधर शांत शहर। इसी सागर में टापू पर बना नेहरू गार्डन अति आकर्षक, मोहक, मादक और पास ही बनी विश्वविख्यात सौर वैधशाला, नौकाविहार का नयनाभिराम उल्लास आनंद। यहीं तट-निकट पहाड़ी मोती मगरी पर मोती महल में भामाशाह ने भोज दिया, पत्तल-दोने में मोती परोसे गये, यह बताने के कि खजाना खाली होने की अफवाह है। प्रताप की पुण्य स्मृति में निर्मित प्रताप-स्मारक, प्रताप की विशाल मूर्ति चेटक पर, प्रतिदिन आने वाले सैलानियों की श्रद्धाभावना का सहज नमन।

महाराणा लाखा के राज में किसी बणजारे द्वारा बनवाई गई पीछोला झील, झील में टापुओं पर बने जगमंदिर, जगनिवास नामक जल महल। मुगल बादशाह शाहजहां का शरणस्थल जगमंदिर, अपने पिता जहांगीर के खिलाफ बगावत करने पर महाराणा कर्णसिंह ने इसमें खुर्रम को शरण दी। पगड़ी बदल भाई बने। ताजमहल की प्रेरणा इसी महल ने दी। जगनिवास इतना सुंदर कि आज यहां विश्वप्रसिद्ध लेक पैलेस होटल चलता है और इसके सामने पानी में बना आधा राज पाने वाली नटनी का चबूतरा। पीछोला का गणगौर घाट, गणगौर उत्सव, हेली नाव री असवारी और कवि पद्माकर ने लिखा गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है?

इसी पीछोला के पूर्वी तट पर बने विशाल भव्य महल, राजपूताने के सबसे बड़े महल, भूमिस्तर से कोई सौ फीट ऊंचे, चारों ओर अठकोणी मीनारें और उन पर लगी गुंबजें, लंदन के विण्डसर महलों से मिलते इमारती पत्थर और श्वेत चूने के पहल की तरह पहचान देने वाले धवल नवल महल। इन महलों के जनाना-मरदाना महलों के कुछ खास भाग आम जनता के लिए खुले, इन खुले महलों का हर भाग, कमरा, चौक, हिस्सा, इतिहास की कई अनूठी गाथाओं, रोमांचकारी घटनाओं के दस्तखत, दस्तावेज समेटे, क्या-क्या नहीं हुआ? क्या-क्या हो गया इन महलों में? पांच सौ वर्षों का सारा इतिहास और एक लंबा तराशा घटनाचक्र इन महलों में प्रतिध्वनित है। प्रथम महाराणा उदयसिंह से लेकर अंतिम महाराणा भूपालसिंह कुल 22 महाराणाओं का उत्थान, उत्कर्ष और कशमकश। भूपालसिंह महाराणा के भूपालशाही ठाठ, देश का एकमात्र 'महाराज प्रमुख' महाराणा। भारतीय लोककलाओं की प्रजास्थानिक लोककलाओं को विश्व-क्षितिज दिलाने वाला भारतीय लोककला मंडल, इसका लोककलात्मक संग्रहालय, इसकी लोककलाओं की शोध-खोज और इसका खुला प्यारा नपा तुला शिष्ट सुखद रंगस्थल रंगमंच। शहर का यह शालिग्राम देश-विदेश का लोककलाओं का लोकतीर्थ। मंडल के आगे पंचवटी बिना बड़ की और पीछे मधुबन तुम कत रहत हरे वाला नहीं, नामक बस्ती तुम्हें नमस्ती।

प्रताप के प्रात: स्मरणीय चेटक की उज्वल कीर्ति का अक्षुण्ण कलश उदयपुर, जिसकी टापों से यहां का जर्रा-जर्रा टेपित है। यहां का चेटक चौराहा, चेटक सिनेमा और चेटक एक्सप्रेस? उस अभय नाम की ओतप्रोत जोत, जलती दीपशिखाएं, फतहसागर बांध की पृष्ठभूमि में बनी सहेलियों की बाड़ी, फव्वारों के लिए प्रसिद्ध यह बाड़ी जब फव्वारित होती है तो रोम-रोम रोमांचित हो उठता है। बात-बात में बरसात देने वाली यह बाड़ी हनीमूनों के लिए भी 'चिरजीवो जोरी जुवै' बनी हुई है।

संस्थाओं की यह नगरी अब आठ यूनिवर्सिटियों की सीटियां बजाती पां-पूं, शिक्षा का कोचिंग हब, सोने-चांदी के जेवरात बेचने वाली ऊंची दुकानें। अब उदयपुर बदल गया है। 'बादली बरसे क्यूंनीए' गीत गाने वाली बाइयां अब दिखाई नहीं देती। भंवरसा के हवामहल में चंपा सूखा हुआ है। चंपाबाग चट्टानी और गुलाबबाग गुलाब विहीन हो गया है। हवेलियां होटलों में दुबक बैठी हैं। भूत महल उड़ाकर लाया गया है। दैत्य मगरी में दैत्य का कोई अता-पता नहीं। गलियों में नानी गली तो घाटियों में भड़भुजा घाटी और टिम्बों में मेहताजी का टिम्बा आबाद है। सेरी, बाड़ी खुर्रा, पोल, नाल, तलाई, घाटी, वाड़ा, चौहट्टा नामी स्थल अस्थल हो गए हैं या फिर पुनर्वास मांग रहे हैं।

बारह पोलों वाले इस शहर में अब चन्द्रसिंह नामी एक महापौर है। हर समय जो आपके स्वागत का उत्सुक बना हुआ है। दंडपोल, फूटा दरवाजा अतीत में छूटा-लूटा लग रहा है। सारे संदर्भ हम चौड़े-साठ, अस्सी, सौ फीट और लेन फोर सिक्स होते जा रहे हैं, देन के नाम देनदारियों की फेहरिस्त दिखाई जा रही है। लेकिन अब भी उदयपुर में मृग-मरीचिका नहीं, मृग-कस्तूरी जैसी सुवास कायम है। यह ग्राम्य-शहर परदेस तक तो पधारो म्हारे देस का हेला दे रहा है- बेमिसाल है यह शहर, बितायें यहां कई प्रहर।

निधन : पवन वेग से उड़ने वाले

राजस्थानी के लिए हर समय सजग तत्पर रहने वाले डॉ. किरण नाहटा ने 3 मई को अंतिम स्वांस ली। यह खबर बीकानेर से डॉ. कविता मेहता ने दी तो लगा जैसे कोई अनिष्टकारी सपना सुन रहा हूं। इधर कोई खबर नहीं छपी। अब अखबार भी अपनी मन मर्जी के अधिक हो गये हैं।

उनसे परिचय तो बहुत बाद हुआ। यह भी पता नहीं था कि उन्होंने मेरे

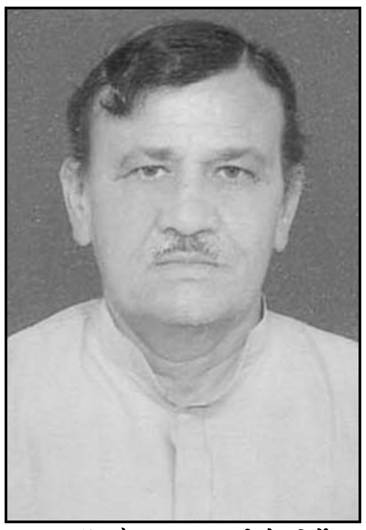

अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावतजी के निर्देशन में आधुनिक हिंदी साहित्य : प्रेरणा स्त्रोत एवं प्रवृत्तियां विषय लेकर पीएच.डी. की। वे स्वभाव से कमबोले, विनम्र और सागरवर गंभीरा ही लगे। एक वजह यह भी थी कि वे भाई साहब के कारण मेरे से भी सम्मानभावी आदर देने वाले संकोचशील ही बने रहे सो मैंने आत्मजा डॉ. कविता से उनका परिचय कराया। उसका निवास भी उनसे अधिक दूर नहीं है सो मिलना-जुलना होता रहता था। एकबार मैंने कविता से कहा भी था कि वे पवनपुरी में रहते ही नहीं हैं, राजस्थानी के लिए तो पवन वेग से उड़ने वाले गंभीर यथार्थवादी समालोचक ही हैं। वे गहन अध्ययन के गहन अन्वेषी थे और जो काम उन्होंने किया उसका स्थायी महत्व है।

डॉ. नाहटा के शोधप्रबंध के अलावा उनका राजस्थानी निबंध संग्रह 'भल लूआं बाजो कित्ती' तथा समालोचना पुस्तक 'पोथी-दर-पोथी' पढ़ने से उनके लेखकीय मिजाज और गहरे पानी पैठ का थाह पाया जा सकता है। राजस्थानी लोकसाहित्य क्षेत्र के में भी उन्होंने घुसपैठी नजरिये से फदकाफदकी नहीं की। राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास के अध्यक्ष पद पर रहते हुए उन्होंने 'लाखीणा लोकगीत', ढोला-मारू दूहा, लोक भजन, लोकगाथाओं तथा कहावतों के अच्छे और पाठकों तक सरल पहुंच देते सस्ते संकलन दिये। 'राजस्थानी गंगा' नाम से वे एक अच्छी पत्रिका का नियमित संपादन कर रहे थे।

मेरे पास उनके कुछ पत्र हैं जिन्हें पढ़कर मुझे अगरचंदजी नाहटा की याद हो आती है। नाहटाजी की तरह किरणजी भी अपने पत्र में बहुत सारी जानकारी लेते-देते रहते। अपने द्वारा किये जा रहे कार्यों की सूचना भी देते और मेरे द्वारा तथा अन्य मित्रों द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी लेते। अपने प्रकाशन भेजते और अन्य उपयोगी पुस्तकें समूल्य भी खरीदने के लिए लालायित रहते। यहां मुझे लिखा एक पत्र दिया जा रहा है जिससे उनकी अध्ययनवृत्ति तथा कार्यपद्धति का पता चलता है-

द्वारा बैद बोरड़ एंड कंपनी
गंगाशहर रोड़, बीकानेर
29.5.2008

आदरणीय डॉ. भानावत सा.,
सादर प्रणाम

आप द्वारा प्रेषित दोनूं ही पुस्तकें मिल गयी। एतदर्थ आभारी हूं। पुस्तकें पूरी तरह से तो पढ़ नहीं पाया हूं पर कुछ-कुछ अंश देख पाया हूं। खूब परिश्रम के साथ तैयार की गई पुस्तकें पर्याप्त सूचनाओं से युक्त हैं। 'राजस्थानी-गंगा' के तीन अंक प्रेस में दिये हुए हैं। जून प्रथम सप्ताह तक तैयार होने पर आपकी सेवा में भिजवा रहा हूं। राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास बीकानेर की ओर से प्रकाशित राजस्थानी लोकगीतों की एक पुस्तक भी आपकी सेवामें भिजवा रहा हूं।

आपकी 'पाबूजी की फड़ (पड़)' एवं 'देवनारायण रो भारत' नामक पुस्तकें मुझे चाहिए। मैं पाबूजी पर थोड़ा काम करना चाहता हूं। पश्चिम राजस्थान में खेतों में काम करते हुए किसान 'भणत' बोलते हैं। कहीं-कहीं उसे 'राम भणत' भी कहते हैं। 'भणत' के रूप में प्रेरणादायक भजनादि के अतिरिक्त श्रम परिहार की दृष्टि से तुकान्त गद्य के रूप में भी कुछ बातें कही जाती हैं।

क्या उदयपुर अंचल में ऐसी कोई परंपरा है? क्या आप उस अंचल में बोली जाने वाली 'भणतें' या उस जैसी किसी प्रकार की सामग्री भिजवा सकते हैं? वैसे राजस्थानी गंगा के एक पुराने अंक में मैंने कुछ भणतें प्रकाशित करवाई थीं। संभव हुआ तो वह अंक भी आपकी सेवामें भिजवा रहा हूं।

हमारे अंचल में विवाह आदि के मांगलिक अवसरों पर 'राती जोगे' की परंपरा है। उस राती जोगे में स्त्रियां अनेक कथात्मक गीत भी गाती हैं। उनमें से कई गीतों का संबंध मध्यकालीन ऐतिहासिक पात्रों से रहा है। क्या आपके यहां भी इस प्रकार के गीत गाये जाते हैं? कभी बीकानेर का कार्यक्रम हो तो सूचित करें ताकि यहां के बुद्धिजीवियों एवं साहित्यप्रेमियों के बीच आपका व्याख्यान रखवाया जा सके। शेष शुभ।

आपका
किरण नाहटा

अब समय बहुत तेजी से पलटा खा रहा है। हमने अगरचंदजी नाहटा, नरोत्तमजी स्वामी, मोतीलालजी मेनारिया, जनार्दनरायजी नागर, देवीलाल जी सामर जैसे मनीषियों का सान्निध्य लेकर अपना कार्य प्रारंभ किया। अब वैसे लोग नहीं रहे। डॉ. किरण नाहटा भी उसी परंपरा के पके हुए पेंकड़े (ज्वार गुच्छ) थे।

-म.भा.

रमा शंकर की पुस्तक 'फेस्टिव ऑफ रिंग्स टू दि गॉड्स' का विमोचन

उदयपुर। उदयपुर के पहले अपस्केल होटल रैडिसन उदयपुर में शुक्रवार को प्रसाद बनाने की पुस्तक का विमोचन किया गया। 'फेस्टिव ऑफ रिंग्स टू दि गॉड्स' नामक पुस्तक के लेखक रमा शंकर हैं और इसका प्रकाशन शुभि पब्लिकेशंस ने किया है। इस पुस्तक में देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में देवताओं को चढ़ाए जाने वाले भिन्न-भिन्न किस्म के प्रसाद की पाक विधियां दी गई हैं।

इसमें शाकाहारी और गैर शाकाहारी दोनों तरह के आयटम की पाक विधियां हैं। पुस्तक में प्रसाद से संबंधित दिलचस्प किस्सों का भी जिक्र है और इन पेशकशों की महत्ता भी बताई गई है। पुस्तक की प्रस्तावना पाक विधियों के मशहूर इतिहासकार डॉ आशीष चोपड़ा ने लिखी है। शुक्रवार को पुस्तक का लोर्कापण एक अनाथ लड़की ने किया। इस मौके पर खाद्य पदार्थों के जरिए दैवीय प्रेम का प्रसार करने और समाज में लड़कियों के महत्त्व पर संदेश भी दिया गया।

यह होटल हमेशा से अच्छे काम के लिए सामाजिक पहल की दिशा में योगदान करता रहा है। पूर्व में रैडिसन उदयपुर ने विभन्न तरह के आयोजन किए हैं। इसमें समाज के वंचित वर्ग के लिए भोजन की व्यवस्था शामिल है। इस मार्ग पर आगे बढ़ते हुए कमजोर की सहायता करते हुए होटल को अनाथ लड़की से पुस्तक का लोर्कापण करने का ख्याल आया।

उल्लेखनीय है कि कार्लसन रेजीडॉर होटल समूह दुनिया के सबसे बड़े और सबसे गतिशील होटल समूहों में से एक है। इसके 1400 से ज्यादा होटल परिचालन में हैं या उनका विकास हो रहा है। इनकी पहुंच दुनिया भर के 115 देशों और क्षेत्रों में है तथा इनमें इसके 220,000 कमरे हैं। कार्लसन रेजीडोर की श्रृंखला में अंतरराष्ट्रीय ब्रांड का शक्तिशाली सेट है- क्वोरवस कलेक्शन, रैडिसन ब्लू, रैडिसन, रैडिसन रेड, पार्क प्लाजा, पार्क इन्न बाई रैडिसन और कंट्री इन्न्स एंड सुइट्स बाई कार्लसन। कार्लसन रेजीडोर होटल समूह और इसके ब्रांड के लिए दुनियाभर में 90,000 लोग काम करते हैं

कान्यो मान्यो

दूध और कुंवर की ललाई

आज ठाकुर साहब अधिक चिंतित लगे। कहने लगे कि उनका राजकुमार दिन-दिन कमजोर होता जा रहा है। मैंने सुझाव दिया कि सोते समय अच्छा घुटाघुटाया मलाईदार दूध पिलाया करें। मान्यो मन ही मन यह सुन सोचने लगा कि कई दिनों बाद आज कान्यो बड़बड़ाता नहीं बोला और यह भी लग रहा है कि अब वह अपनी-पराये की जिम्मेदारी भी महसूस करने लगा है।

यह सोच मान्यो ने हुंकारा भरा और कहा, आगे क्या हुआ। कान्यो बोला, जिसको दूध पिलाने का जिम्मा दिया, थोड़े दिन तक तो उसने अच्छा निर्वाह किया पर बाद में कुंवरजी के चेहरे की ललाई फीकी पड़ने लगी। यह देख उन्होंने एक आदमी और रखा जिसे यह जिम्मदारी दी कि जो दूध पिला रहा है उस पर निगाह रखे। कुछ दिन तो ठीक चला पर बाद में दोनों मिल गये और कहने लगे कि कुंवर तो सो जाता है। उसे पता ही नहीं रहता कि कब जगा और दूध पिया। अच्छा तो यही है कि पाव-पाव दूध अपन दोनों पी जावें। दोनों की पक्की सहमति हो गई। यह भी कि यह भेद कोई किसी को नहीं देगा।

कुंवर की ललाई फीकी पड़ती देख ठाकुर साहब को चिंता हुई कि हो न हो दोनों की कोई चालाकी है जिससे कुंवर फिर दुबला होता जा रहा है। उन्होंने एक तीसरे आदमी की तलाश की और उसे यह भलावण दे दी कि वह दोनों को देखता रहे कि समय पर कुंवरजी को कहे अनुसार दूध उसी मात्रा में पिलाते हैं या नहीं।

तीसरे को देख पहले वाले दोनों चेत गये। गड़बड़ी बंद कर दी और ठीक से दूध पिलाने का काम करते रहे। धीरे-धीरे तीनों में दोस्ती हो गई तो खुल गये। दूध की बात निकली तो पुराने दोनों ने सच उगल दिया। तीसरा अधिक समझदार, होशियार था। उसने सुझाव दिया कि कुंवरजी को दूध पिलाने की आवश्यकता ही क्या है। वे तो वैसे ही दिनभर चरते रहते हैं। अच्छा खाना तो अपन ने देखा ही नहीं सो दूध तो पूरा ही अपन पिया करें और कुंवरजी के होठों पर मलाई लगा दिया करें ताकि ठाकुर साहब को बता सकें कि उनके होठ देख लें, दूध घुटाघुटाया लगातार पिलाया जा रहा है। यह क्रम कुछ दिन चला। बाद में वही हुआ जो होना था।

ठाकुर साहब को अक्ल आई कि जिन तीनों को एक दूसरे की देखभाल के लिए रखा उनका पारिश्रमिक ही इतना है कि दूध की कीमत तो कुछ भी नहीं है और फिर भी कुंवरजी को दूध नसीब नहीं हो रहा है। उन्होंने कुंवर को बुलाकर सारी स्थिति से अवगत करा दिया और चेता दिया कि अपना काम आप करने से ही स्थिति में सुधार हो सकेग। अन्यथा तो जिसको भी देखभाल के लिए रखा जायेगा वह ऐसे ही हजामत करता रहेगा। बाल ऐसे उड़ा देगा कि तेल कंघी और कांच किसी की जरूरत नहीं पड़ेगी और सिर पर हाथ फिराने से बाल तो क्या, चोटी का बाल भी उखड़ा मिलेगा। मान्यो ने यह किस्सा सुन बड़ा ठहाका लगाया और दोनों कसकर गले मिले। बोले, तंत्र चाहे राज का हो या फिर लोक का, व्यक्ति स्वयं को ही अपनी जिम्मेदारी लेनी होगी।

शब्द रंजन कार्यालय में उदयपुर विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के प्रो. कुंजन आचार्य (दायें) के साथ सुकवि डॉ. भगवतीलाल व्यास (मध्य) एवं डॉ. महेन्द्र भानावत विशेष चर्चा-मंथन में।

जीवनशैली में बदवाल से उच्च रक्तचाप में बढ़ोतरी

उदयपुर। जीवनशैली में आए बदलाव के कारण राजस्थान में दिल से सम्बन्धित विकार पनपने लगे हैं। मुख्य रूप से शहरी आबादी के बीच उच्च रक्तचाप की व्यापकता पाई गई। अत: भोजन की आदतों को समायोजित करने की जरूरत है। यह बात डॉ. अतुल माथुर, निदेशक इनवेसिव कार्डियोलॉजी, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली ने कही।

डॉ. माथुर ने कहा कि उच्च रक्तचाप के कारणों में प्रमुख रूप से धूम्रपान, मोटापा, शारीरिक गतिविधि या व्यायाम की कमी, भोजन में अत्याधिक मात्रा में नमक और मसालों का सेवन, मदिरापान, तनाव, अधिक उम्र, अनुवांशिक, पारिवारिक पृष्ठभूमि शामिल है। देश के अन्य हिस्सों की तुलना में राजस्थान में चटखारेदार, मसालेदार और नमकयुक्त भोजन का सेवन अधिक किया जाता है जिसका हृदय पर भारी प्रभाव पड़ता है। यहां देशी घी भी भोजन का एक अभिन्न अंग माना जाता है, जो कि सेहत के लिए तो बेहतर है, लेकिन हद से ज्यादा घी का सेवन स्वास्थ्य को क्षति पहुंचता है और रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक हो जाने के कारण उच्च रक्तचाप हो जाता है।

डॉ. माथुर ने कहा कि शरीर के लिए सोडियम की अधिकतम मात्रा 2,400 से 3000 मिलीग्राम प्रतिदिन होनी चाहिए। अत्यधिक मात्रा में नमक के सेवन का परिणाम रक्त में जल प्रतिधारणा की वृद्धि हो जाती है और प्रत्यक्ष रूप से रक्तचाप बढ़ने का खतरा रहता है। जल प्रतिधारणा की रक्त में मात्रा अधिक होने से इसकी पम्पिंग रक्त धमनियों के माध्यम से होती है नतीजतन उच्च रक्तचाप होने लगता है। परिणाम स्वरूप या तो हृदय को क्षति पहुंचती है या फिर दिल का दौरा पड़ सकता है। इसके लिए जरूरी है कि जब आप खाना पका रहे हैं, तो उसमें घर के एक सदस्य को कम मानते हुए नमक और मसाले डालें।

कीर्तन की है रात बाबा आज थाणे आणो है

सौ फीट लंबे, 80 फीट चौड़े और 51 फीट ऊंचे मंच पर 35 फीट ऊंची गादी पर तिरुपति बालाजी महाराज के संग खाटू नरेश श्याम प्रभु, गणनायक और सालासर बालाजी विराजमान

उदयपुर। रोशनी से जगमगाते गगनकाय श्याम दरबार में शनिवार रात हुई भजन संध्या का नजारा मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। ऐसा लगा मानो भक्त नाच-गाकर प्रभु को रिझा रहे हों और प्रभु दोनों हाथों से आशीष बरसा रहे हों।

श्री-खाटू श्याम मित्र मंडल ट्रस्ट की ओर से 'एक शाम प्रभु श्याम के नाम' विराट भजन संध्या शाम साढ़े सात बजे शुरू हुई। टाउनहॉल परिसर में सौ फीट लंबे, 80 फीट चौड़े और 51 फीट ऊंचे मंच पर 35 फीट ऊंची गादी पर तिरुपति बालाजी महाराज के संग खाटू नरेश श्याम प्रभु, गणनायक और सालासर बालाजी विराजमान थे। विविध खंडों में सजे मंच की पहली मंजिल के 15 फीट पर अखंड ज्योत दरबार और 25 फीट पर 56 भोग दरबार सजाया गया। प्रभु श्याम का श्रृंगार नवनिर्मित स्वर्णाभूषणों, जवाहरातों, हीरे-मोती, माणिक्य आदि दुर्लभ नवरत्नों से किया गया था। बाबा के सिर पर धराया गया स्वर्ण मुकुट

महाभारत काल की बेजोड़ कलाकृति का रूप लिये था। बाबा का यह अद्भुत श्रृंगार शिल्पी नवीन कसेरा की टीम ने किया जो अद्भुत विस्मरणीय अवर्णनीय अलौकिकता लिये था। श्याम रीत एवं नेकचार अनुसार पूरे प्रांगण एवं तिरुपति श्याम दरबार को गो मूत्र, गंगाजल, खाटू श्याम जल से पवित्र कर श्याम प्रभु के शीश को थाईलैण्ड, कोलकाता, बैंगलोर से मंगवाये पुष्पों से सजाकर विराजमान किया गया। भजन संध्या की शुरुआत में श्याम रीतिनुसार प्रभु के सिंहासन के समक्ष अखंड ज्योत में आहुतियां दी गई। बाबा का दरबार शिल्पी राजकुमार कसेरा के सानिध्य में सौ से अधिक कलाकारों ने तिरुपति बालाजी मंदिर की स्वर्णिम आभा की प्रतिकृति के रूप में सजाया।

श्याम प्रभु को सवामणी चूरमा, मक्खन, केसर युक्त दूध, खीर, पंचामृत, पान बीड़ा, खोपरा-नारियल, सूखे मेवे, मौसमी फलों सहित छप्पन प्रकार के मिष्ठान और व्यंजनों का भोग धराया गया। भजन संध्या में श्रद्धालुओं के लिए भंडारा में महाप्रसादी बनाई गई। भंडारे में हलवा, पूड़ी-सब्जी, छाछ, मिल्क रोज, चाय की स्टॉलें लगाई गई। महाआरती के बाद भक्तों में प्रसाद बांटा गया।

भजन संध्या में महावीरवासु अग्रवाल ने अपने दिल का हाल मैं सुणावन आया हां..., लायक नहीं तेरे फिर भी निभाते हो..., गुडगांव के नरेश सैनी ने पहले दौर में मारा बाबा हनुमान..., कुछ दे या न दे अपने दीवाने को दो आंसू तो दे दे..., नई दिल्ली के कुमार विशु ने कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा..., उड़ जा हंस अकेला.., तू लीले चढ़..., श्याम रतन धन पायो..., जयपुर के निजाम भाई, बिंदुबाई और आजम भाई की आर्केस्ट्रा पार्टी ने जीते भी लकड़ी, मरते भी लकड़ी देख तमाशा लकड़ी का..., कीर्तन की है रात बाबा आज थाणे आणो है..., नजफगढ़ के छोटा खाटू धाम की उषा बहन ने लोकप्रसिद्ध मोरछड़ी की प्रस्तुतियों से पांडाल में मौजूद भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

संध्या में ट्रस्ट अध्यक्ष डूंगरपुर महापौर के. के. गुप्ता, ट्रस्टी धीरेंद्र सच्चान, डीके खेड़ा, प्रवक्ता नारायण अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुनील बंसल, ट्रस्ट की महिला समिति की राजकुमारी गोयल, स्नेहलता बंसल, वीणु गोयल, इशिता गोयल, रावी गोयल, मीमांसा बंसल ने सेवाएं दी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।